Pariksha Saathi — हरियाणा सामान्य ज्ञान नोट्स

1 टॉपिक • 11 पाठ • अपडेट 28 अक्टूबर 2026

ये नोट्स एक AI सहायक ने लिखे हैं - वही पाठ जो Pariksha Saathi ऐप में हैं। किसी विषय-विशेषज्ञ ने इनकी समीक्षा नहीं की है। ज़रूरी तथ्य आधिकारिक स्रोत या मानक पाठ्यपुस्तक से मिला लें। कोई गलती दिखे तो बताएँ: parikshasaathi.com/contact/

इन परीक्षाओं के पाठ्यक्रम में शामिल हरियाणा सामान्य ज्ञान के टॉपिक: Haryana CET (Group C)। हर टॉपिक के अंत में उसके मुफ़्त अभ्यास प्रश्नों का लिंक है; पूरे मॉक टेस्ट Pariksha Saathi ऐप और वेबसाइट पर मुफ़्त हैं।

विषय-सूची

हरियाणा सामान्य ज्ञान

दोहराव पत्रक

हरियाणा सामान्य ज्ञान

हरियाणा सामान्य ज्ञान

परीक्षा क्या पूछती है: हरियाणा सामान्य ज्ञान हरियाणा CET (ग्रुप C), HSSC की अन्य परीक्षाओं और हरियाणा पुलिस परीक्षाओं का स्थायी खंड है। प्रश्न तथ्यात्मक होते हैं: कोई हड़प्पाकालीन स्थल किस जिले में है, पानीपत में किसने किससे और कब युद्ध किया, कौन-सा बैराज किस नदी पर है, कौन-सा नृत्य किस अवसर का है, और याद रखने योग्य संख्याएँ (1 नवंबर 1966, 90, 10, 5)।

प्राचीन इतिहास: घग्घर का मैदान हड़प्पाकालीन स्थलों से भरा है। राखीगढ़ी (हांसी जिला, जिसे दिसंबर 2025 में हिसार से अलग किया गया) भारत का सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल माना जाता है; आर.एस. बिष्ट द्वारा उत्खनित बनावली (फतेहाबाद) से हल का मृण्मय प्रतिरूप मिला; भिरड़ाना (फतेहाबाद) के प्राक्-हड़प्पा स्तरों को 2016 के एक अध्ययन ने 8वीं–7वीं सहस्राब्दी ई.पू. का माना है, जो इसे सिंधु परंपरा के सबसे पुराने स्थलों में रखता है; मिताथल भिवानी में है। प्राचीन परंपरा (मनुस्मृति) ने ब्रह्मावर्त को सरस्वती और दृषद्वती के बीच माना। कुरुक्षेत्र में ज्योतिसर गीता-उपदेश के स्थान के रूप में पूजित है और ब्रह्म सरोवर पर सूर्य ग्रहण के समय श्रद्धालु उमड़ते हैं। अग्रोहा अग्रवालों के पूर्वज महाराजा अग्रसेन से जुड़ा है। थानेसर (स्थाण्वीश्वर) पुष्यभूति वंश की राजधानी था; हर्षवर्धन का राज्याभिषेक यहीं 606 ई. में हुआ और बाद में उन्होंने कन्नौज से शासन किया; उनके दरबारी कवि बाणभट्ट ने हर्षचरित लिखा।

मध्यकालीन इतिहास: दिल्ली के मार्ग पर स्थित हरियाणा ने बार-बार उत्तर भारत का भाग्य तय किया। तराइन (तरावड़ी, करनाल) में पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने 1191 में मुहम्मद गौरी को हराया और 1192 में उससे हार गए। 1240 में रज़िया सुल्तान कैथल के निकट मारी गई। फ़िरोज़ शाह तुगलक ने हिसार (1354) और फतेहाबाद बसाए, यमुना से नहरें निकलवाईं और टोपरा से एक अशोक स्तंभ दिल्ली ले गया। पानीपत में 21 अप्रैल 1526 को बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया और काबुली बाग मस्जिद बनवाई; 5 नवंबर 1556 को बैरम खाँ के नेतृत्व में अकबर की सेना ने हेमू को हराया; और 14 जनवरी 1761 को अहमद शाह अब्दाली ने सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व वाले मराठों को कुचल दिया। जहाँगीर के कोषाध्यक्ष शेख फ़रीद ने 1607 में फ़रीदाबाद बसाया; नवाब फ़िदाई खाँ ने पिंजौर उद्यान बनवाया; 1739 में नादिरशाह ने करनाल में मुहम्मद शाह को हराया; बंदा सिंह बहादुर ने लोहगढ़ से शासन किया। 1803 की सुर्जी-अंजनगाँव की संधि से यह क्षेत्र अंग्रेज़ों के अधीन आया।

विद्रोह, स्वतंत्रता संग्राम और राज्य का गठन: 1857 में रेवाड़ी के राव तुलाराम की सेना ने नारनौल के निकट नसीबपुर में अंग्रेज़ों से युद्ध किया और बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह को 1858 में फाँसी दी गई; दंडस्वरूप इस क्षेत्र को उत्तर-पश्चिमी प्रांत से हटाकर पंजाब में मिला दिया गया। लाला लाजपत राय ने हिसार में वकालत की, सर छोटूराम ('दीनबंधु') यूनियनिस्ट पार्टी के सह-संस्थापक थे और पंडित नेकीराम शर्मा 'हरियाणा केसरी' के रूप में याद किए जाते हैं। हुकम सिंह समिति और न्यायमूर्ति जे.सी. शाह के सीमा आयोग के बाद पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 ने 1 नवंबर 1966 को हरियाणा बनाया। चंडीगढ़ केंद्रशासित प्रदेश बना और साझा राजधानी तथा साझा उच्च न्यायालय का मुख्यालय है। पंडित भगवत दयाल शर्मा प्रथम मुख्यमंत्री और धर्म वीर प्रथम राज्यपाल थे। एकसदनीय विधान सभा में 90 सीटें हैं, और राज्य लोकसभा में 10 तथा राज्यसभा में 5 सदस्य भेजता है। 1967 में गया लाल के दलबदल से 'आया राम गया राम' मुहावरा बना, और SYL नहर पंजाब के साथ लंबे समय से चला आ रहा जल विवाद है। जनगणना 2011 में लिंगानुपात 879 दर्ज हुआ, जो राज्यों में सबसे कम था।

भूगोल और वन्यजीव: हरियाणा (44,212 वर्ग किमी) स्थलरुद्ध है, तीन ओर से दिल्ली को घेरता है और यमुना इसे उत्तर प्रदेश से अलग करती है। उत्तर-पूर्व की शिवालिक पहाड़ियों में मोरनी पहाड़ियाँ और सर्वोच्च बिंदु करोह चोटी हैं; दक्षिण में अरावली की शाखाएँ फैली हैं। इनके बीच निचले खादर और ऊँचे बांगर वाला जलोढ़ मैदान है, जो दक्षिण-पश्चिम में रेतीला और शुष्क है। एकमात्र बारहमासी नदी यमुना हथनीकुंड (यमुनानगर) पर पश्चिमी यमुना नहर को जल देती है। घग्घर में कौशल्या, टांगरी और मारकंडा मिलती हैं और सिरसा के निकट इस पर ओटू बैराज है; साहिबी राजस्थान से निकलती है, रेवाड़ी में इस पर मसानी बैराज है और दिल्ली में यह नजफ़गढ़ नाले के रूप में पहुँचती है; आदिबद्री सरस्वती का उद्गम माना जाता है। सुल्तानपुर (गुरुग्राम) और कलेसर (यमुनानगर) राष्ट्रीय उद्यान हैं, भिंडावास (झज्जर) सबसे बड़ी आर्द्रभूमि है और पिंजौर में भारत का पहला गिद्ध प्रजनन केंद्र है। राजकीय प्रतीक: काला हिरण, काला तीतर, पीपल और कमल।

अर्थव्यवस्था: पंजाब के साथ हरियाणा गेहूँ की हरित क्रांति में अग्रणी रहा। गेहूँ और धान प्रमुख फसलें हैं; करनाल और कैथल के आसपास बासमती, शुष्क दक्षिण में बाजरा और सरसों तथा सिरसा, हिसार और फतेहाबाद में कपास उगती है। मुर्रा भैंस और हरियाणा नस्ल का गोवंश यहाँ की देशी नस्लें हैं; NDRI, CSSRI और IIWBR करनाल में तथा CIRB और चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय हिसार में हैं। हरियाणा को 1970 तक सभी गाँवों में बिजली पहुँचाने का श्रेय दिया जाता है। गुरुग्राम (1983 से मारुति) ऑटोमोबाइल और IT केंद्र है और पानीपत 'बुनकरों का शहर'; अंबाला छावनी वैज्ञानिक उपकरण और यमुनानगर प्लाईवुड बनाता है।

संस्कृति और व्यक्तित्व: फाग फाल्गुन में, लूर बांगर क्षेत्र की लड़कियों द्वारा वसंत में और खोड़िया बारात जाने की रात महिलाओं द्वारा किया जाता है; सांग वह लोकनाट्य है जिसे 'सूर्य कवि' पंडित लखमीचंद ने प्रसिद्ध बनाया। प्रमुख बोलियाँ हैं: बांगरू (मध्य), बागड़ी (पश्चिम), अहीरवाटी (दक्षिण), मेवाती (नूंह) और ब्रज (पलवल)। सूरजकुंड शिल्प मेला हर फ़रवरी में फ़रीदाबाद में लगता है। याद रखने योग्य नाम: कल्पना चावला (करनाल), संतोष यादव (रेवाड़ी), पंडित जसराज (मेवाती घराना), मुक्केबाज़ी के 'मिनी क्यूबा' भिवानी के विजेंदर सिंह, साक्षी मलिक और 'हरियाणा हरिकेन' कपिल देव।

सावधानी के बिंदु: तराइन 1191 (पृथ्वीराज जीते) और 1192 (गौरी जीता); पानीपत 1526 बाबर, 1556 अकबर की सेना, 1761 अब्दाली। थानेसर हर्ष की पहली राजधानी थी, कन्नौज बाद की। हथनीकुंड यमुना पर, ओटू घग्घर पर और मसानी साहिबी पर है। कालीबंगा राजस्थान में है। दीनबंधु छोटूराम हैं, हरियाणा केसरी नेकीराम शर्मा और पंजाब केसरी लाजपत राय।

उदाहरण

- जिलेवार हड़प्पाकालीन स्थल: राखीगढ़ी (दिसंबर 2025 से हांसी जिला, पहले हिसार; भारत में सबसे बड़ा), बनावली और भिरड़ाना (फतेहाबाद), मिताथल (भिवानी)। कालीबंगा राजस्थान में है, हरियाणा में नहीं।
- पानीपत के तीन युद्ध: 1526 बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया; 1556 बैरम खाँ के नेतृत्व में अकबर की सेना ने हेमू को हराया; 1761 अहमद शाह अब्दाली ने सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व वाले मराठों को हराया।
- तराइन (तरावड़ी, करनाल): 1191 पृथ्वीराज तृतीय ने मुहम्मद गौरी को हराया; 1192 गौरी ने पृथ्वीराज तृतीय को हराया। करनाल 1739: नादिरशाह ने मुहम्मद शाह को हराया।
- थानेसर: पुष्यभूति (वर्धन) वंश; हर्षवर्धन का राज्याभिषेक 606 ई., बाद में कन्नौज से शासन; बाणभट्ट ने हर्षचरित लिखा।
- संस्थापक: हिसार 1354 और फतेहाबाद (फ़िरोज़ शाह तुगलक), फ़रीदाबाद 1607 (जहाँगीर के कोषाध्यक्ष शेख फ़रीद), पिंजौर उद्यान (नवाब फ़िदाई खाँ), सूरजकुंड (तोमर राजा सूरजपाल), लोहगढ़ राजधानी (बंदा सिंह बहादुर)।
- राज्य गठन: हुकम सिंह समिति और शाह आयोग (1966), पंजाब पुनर्गठन अधिनियम 1966, हरियाणा दिवस 1 नवंबर 1966; प्रथम मुख्यमंत्री पंडित भगवत दयाल शर्मा, प्रथम राज्यपाल धर्म वीर।
- संख्याएँ: विधान सभा 90 (एकसदनीय), लोकसभा 10, राज्यसभा 5; क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किमी; जनगणना 2011 में लिंगानुपात 879, राज्यों में सबसे कम।
- नदीवार बैराज: हथनीकुंड यमुना पर (यमुनानगर), ओटू घग्घर पर (सिरसा), मसानी साहिबी पर (रेवाड़ी)। साहिबी दिल्ली में नजफ़गढ़ नाले के रूप में पहुँचती है।
- संरक्षित क्षेत्र: सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान (गुरुग्राम), कलेसर राष्ट्रीय उद्यान (यमुनानगर), भिंडावास अभयारण्य (झज्जर, सबसे बड़ी आर्द्रभूमि), जटायु गिद्ध प्रजनन केंद्र (पिंजौर)।
- राजकीय प्रतीक: पशु काला हिरण, पक्षी काला तीतर, वृक्ष पीपल, पुष्प कमल।
- उपनाम: दीनबंधु = सर छोटूराम; हरियाणा केसरी = पंडित नेकीराम शर्मा; पंजाब केसरी = लाला लाजपत राय; सूर्य कवि = पंडित लखमीचंद; हरियाणा हरिकेन = कपिल देव; मिनी क्यूबा = भिवानी।
- अवसर के अनुसार नृत्य: फाग (फाल्गुन, किसान), लूर (बांगर क्षेत्र की लड़कियाँ, वसंत), खोड़िया (महिलाएँ, बारात जाने की रात); सांग लोकनाट्य है और रागिनी लोकगीत की विधा।

> **त्वरित दोहराव:** हरियाणा गठन 1 नवंबर 1966 (पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, शाह आयोग); प्रथम मुख्यमंत्री भगवत दयाल शर्मा, राज्यपाल धर्म वीर; विधान सभा 90, लोकसभा 10, राज्यसभा 5; राजधानी और उच्च न्यायालय चंडीगढ़ में साझा; राखीगढ़ी (हांसी, पहले हिसार), बनावली और भिरड़ाना (फतेहाबाद); थानेसर में हर्ष 606 ई.; तराइन 1191/1192; पानीपत 1526, 1556, 1761; हिसार 1354; राव तुलाराम, नसीबपुर 1857; यमुना एकमात्र बारहमासी नदी, हथनीकुंड; घग्घर पर ओटू, साहिबी पर मसानी; सुल्तानपुर, कलेसर राष्ट्रीय उद्यान; काला हिरण, काला तीतर, पीपल, कमल; मुर्रा; सूरजकुंड मेला फ़रवरी में।

प्राचीन हरियाणा: हड़प्पाकालीन स्थल, कुरुक्षेत्र और थानेसर

प्राचीन हरियाणा का महत्त्व: हरियाणा यमुना और घग्घर की सूखी धाराओं के बीच स्थित है; घग्घर नदी-तंत्र को अनेक विद्वान वैदिक सरस्वती मानते हैं। सिंधु घाटी और गंगा के मैदान के बीच का यह उपजाऊ गलियारा बहुत पहले बस गया था और सदा भारत के हृदय-प्रदेश की ओर जाने वाले मुख्य मार्ग पर रहा। इसलिए राज्य का प्राचीन इतिहास एक लंबी कड़ी की तरह चलता है: हड़प्पाकालीन नगर, वैदिक संस्कृति का केंद्र, महाभारत का कुरु राज्य, यौधेय जैसे जनजातीय गणराज्य और अंत में थानेसर में हर्षवर्धन की राजधानी। परीक्षाएँ इसी कड़ी को परखती हैं: कौन-सा स्थल किस जिले में है, वहाँ क्या मिला और कौन-सा शासक किस स्थान से जुड़ा है।

हड़प्पाकालीन स्थल: घग्घर-चौटांग का मैदान हड़प्पाकालीन बस्तियों के सबसे सघन समूहों में से एक है। नारनौंद तहसील का गाँव राखीगढ़ी, जो लंबे समय तक हिसार जिले में रहा और अब नवगठित हांसी जिले में आता है, भारत का सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल माना जाता है; भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण के अमरेंद्र नाथ ने 1990 के दशक के अंत में और बाद में वसंत शिंदे के नेतृत्व में डेक्कन कॉलेज के दल ने इसका उत्खनन किया, तथा 2020 के केंद्रीय बजट ने इसे विकसित किए जाने वाले पाँच प्रतिष्ठित (आइकॉनिक) पुरातात्विक स्थलों में शामिल किया। फतेहाबाद जिले के बनावली का उत्खनन आर.एस. बिष्ट ने 1970

के दशक में किया; यहाँ से हल का मृण्मय (टेराकोटा) प्रतिरूप और जौ के साक्ष्य मिले। फतेहाबाद में ही स्थित कुणाल में अत्यंत प्रारंभिक प्राक्-हड़प्पा स्तर और आभूषणों का एक भंडार मिला, जिसमें चाँदी के मुकुट भी थे। फतेहाबाद के ही भिरड़ाना के प्राक्-हड़प्पा स्तरों को 2016 के एक अध्ययन ने 8वीं-7वीं सहस्राब्दी ई.पू. का माना है, और यहाँ के एक मृद्भांड-खंड पर मोहनजोदड़ो की कांस्य 'नर्तकी' जैसी आकृति अंकित है। भिवानी के मिताथल और हिसार के सिसवाल का उत्खनन सूरजभान ने किया, और सिसवाल के नाम पर एक प्रारंभिक प्राक्-हड़प्पा संस्कृति का नाम पड़ा है।

सरस्वती, दृषद्वती और ब्रह्मावर्त: ऋग्वेद सरस्वती की सबसे महान नदी के रूप में स्तुति करता है। परंपरा इसका उद्गम यमुनानगर जिले की शिवालिक तलहटी में आदि बद्री को मानती है; मौसमी घग्घर को व्यापक रूप से सरस्वती और चौटांग को दृषद्वती माना जाता है। मनुस्मृति इन दोनों देवनदियों के बीच की भूमि को ब्रह्मावर्त, अर्थात् देवताओं द्वारा निर्मित देश, कहती है, और यही क्षेत्र वैदिक संस्कृति का केंद्र बना। सरस्वती तट पर स्थित पिहोवा, प्राचीन पृथूदक, आज भी पितरों के श्राद्ध-कर्म का स्थान है। 'हरियाणा' नाम की दो लोकप्रिय व्याख्याएँ हैं: हरि-अयन, अर्थात् ईश्वर का निवास, या हरित-अरण्य, अर्थात् हरा-भरा वन; दोनों पारंपरिक व्याख्याएँ हैं, प्रमाणित इतिहास नहीं।

कुरुक्षेत्र और कुरु: राजा कुरु के नाम पर बसा कुरुक्षेत्र महाभारत युद्ध की भूमि है, और भगवद्गीता 'धर्मक्षेत्रे कुरुक्षेत्रे' शब्दों से आरंभ होती है। थानेसर के निकट ज्योतिसर को वह स्थान माना जाता है जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, और कुरुक्षेत्र की पवित्र भूमि परंपरागत रूप से 48 कोस की परिक्रमा है जिसमें अनेक तीर्थ हैं। 6वीं शताब्दी ई.पू. में कुरु, बौद्ध ग्रंथ अंगुत्तर निकाय में वर्णित सोलह महाजनपदों में से एक थे और उनकी राजधानी इंद्रप्रस्थ थी; उनका क्षेत्र वर्तमान हरियाणा और दिल्ली क्षेत्र के बड़े भाग में फैला था।

मौर्य, यौधेय और अग्रोहा: उत्तरी हरियाणा के टोपरा से लाए गए स्तंभ पर अशोक के अभिलेख हैं; फ़िरोज़ शाह तुगलक इसे 14वीं शताब्दी में दिल्ली ले गया, और यह एकमात्र अशोक स्तंभ है जिस पर सातों स्तंभ-लेख अंकित हैं। जगाधरी के निकट चनेटी स्तूप को मौर्य काल का माना जाता है, और पास का स्रुघ्न (सुघ) एक समृद्ध नगर था जिसका बाद में चीनी यात्री ह्वेनसांग ने वर्णन किया। मौर्यों के बाद योद्धा गणराज्य (गण) यौधेयों ने इस क्षेत्र के बड़े भाग पर अधिकार रखा; उनके सिक्कों पर कार्तिकेय और 'यौधेय गणस्य जयः' (यौधेय गण की विजय) लेख मिलता है, और रोहतक के निकट खोखराकोट से उनके सिक्कों के साँचे मिले हैं। रुद्रदामन का जूनागढ़ अभिलेख (150 ई.) उन्हें पराजित करने का दावा करता है, और समुद्रगुप्त की प्रयाग प्रशस्ति उन्हें गुप्तों की अधीनता स्वीकार करने वाले गणों में गिनाती है। हिसार जिले का अग्रोहा अग्रवाल समुदाय के पूर्वज महाराजा अग्रसेन का पारंपरिक केंद्र है, और इसके उत्खनित टीले से सिक्के तथा एक प्राचीन नगर के अवशेष मिले हैं।

थानेसर और हर्षवर्धन: 6वीं शताब्दी ई. में पुष्यभूति (वर्धन) वंश कुरुक्षेत्र के निकट स्थाण्वीश्वर, आधुनिक थानेसर, में उभरा। प्रभाकरवर्धन इस वंश का पहला शासक था जिसने महाराजाधिराज की उपाधि धारण की। उसके बड़े पुत्र राज्यवर्धन और उसकी पुत्री राज्यश्री के पति, कन्नौज के मौखरि राजा ग्रहवर्मा, की मृत्यु के बाद छोटा पुत्र हर्षवर्धन 606 ई. में सिंहासन पर बैठा, जो हर्ष संवत् का पहला वर्ष है। हर्ष ने बाद में अपनी राजधानी कन्नौज स्थानांतरित की, 647 ई. तक शासन किया और संस्कृत नाटक रत्नावली, प्रियदर्शिका और नागानंद लिखे। उसके दरबारी कवि बाणभट्ट ने हर्षचरित में स्थाण्वीश्वर का वर्णन किया, और ह्वेनसांग उसके राज्य में आया। थानेसर का 'हर्ष का टीला' नामक टीला उसकी राजधानी से जुड़ा है।

उदाहरण

- राखीगढ़ी (नारनौंद तहसील; लंबे समय तक हिसार जिले में, अब नवगठित हांसी जिले में): भारत का सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल माना जाता है; 2020 के केंद्रीय बजट में पाँच प्रतिष्ठित पुरातात्विक स्थलों में शामिल।
- बनावली (फतेहाबाद, आर.एस. बिष्ट द्वारा उत्खनित): हल का मृण्मय प्रतिरूप और जौ। कुणाल (फतेहाबाद): अत्यंत प्रारंभिक प्राक्-हड़प्पा स्तर और चाँदी के मुकुट।
- भिरड़ाना (फतेहाबाद): 2016 के एक अध्ययन के अनुसार 8वीं-7वीं सहस्राब्दी ई.पू. के प्राक्-हड़प्पा स्तर और 'नर्तकी' जैसी आकृति वाला मृद्भांड-खंड। मिताथल (भिवानी) और सिसवाल (हिसार) का उत्खनन सूरजभान ने किया।
- ब्रह्मावर्त (मनुस्मृति): सरस्वती (घग्घर) और दृषद्वती (चौटांग) के बीच की भूमि। आदि बद्री (यमुनानगर) सरस्वती का पारंपरिक उद्गम है।
- कुरु महाजनपद: सोलह महाजनपदों में से एक, राजधानी इंद्रप्रस्थ। कुरुक्षेत्र का नाम राजा कुरु पर पड़ा; ज्योतिसर गीता-उपदेश का पारंपरिक स्थल है।
- टोपरा स्तंभ: फ़िरोज़ शाह तुगलक द्वारा दिल्ली ले जाया गया अशोक स्तंभ; सातों स्तंभ-लेखों वाला एकमात्र अशोक स्तंभ।
- यौधेय: योद्धा गणराज्य; कार्तिकेय और 'यौधेय गणस्य जयः' वाले सिक्के; खोखराकोट (रोहतक) से सिक्कों के साँचे; रुद्रदामन ने हराया (जूनागढ़ अभिलेख, 150 ई.); समुद्रगुप्त की अधीनता स्वीकार की।
- अग्रोहा (हिसार): अग्रवालों के पूर्वज महाराजा अग्रसेन की पारंपरिक राजधानी। सरस्वती तट पर पिहोवा (पृथूदक) पितृ-कर्म का केंद्र है।
- थानेसर (स्थाण्वीश्वर): पुष्यभूति वंश की राजधानी; हर्षवर्धन का राज्याभिषेक 606 ई. (हर्ष संवत् का आरंभ), बाद में 647 ई. तक कन्नौज से शासन; बाणभट्ट ने हर्षचरित लिखा; ह्वेनसांग आया।

> **त्वरित दोहराव:** राखीगढ़ी भारत का सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल (नारनौंद; लंबे समय तक हिसार जिला, अब हांसी जिला; 2020 में प्रतिष्ठित स्थल); बनावली (फतेहाबाद, आर.एस. बिष्ट) हल का प्रतिरूप; कुणाल चाँदी के मुकुट; भिरड़ाना 8वीं-7वीं सहस्राब्दी ई.पू.; मिताथल (भिवानी); ब्रह्मावर्त सरस्वती-दृषद्वती के बीच (मनुस्मृति); कुरु राजधानी इंद्रप्रस्थ; ज्योतिसर गीता-स्थल; टोपरा स्तंभ पर सातों लेख; यौधेय, कार्तिकेय वाले सिक्के, खोखराकोट; अग्रोहा-अग्रसेन; हर्ष का राज्याभिषेक थानेसर में 606 ई., बाद में कन्नौज; बाणभट्ट।

मध्यकालीन हरियाणा: तराइन, पानीपत के तीन युद्ध और उसके बाद

दिल्ली का मार्ग: उत्तर-पश्चिम से आने वाले लगभग हर आक्रमणकारी और दिल्ली की रक्षा करने वाली हर सेना को हरियाणा पार करना पड़ता था। लाहौर से दिल्ली का पुराना राजमार्ग अंबाला, थानेसर, करनाल, पानीपत और सोनीपत से होकर जाता था, इसलिए ये मैदान वे रणक्षेत्र बने जहाँ उत्तर भारत के शासकों

का भाग्य तय हुआ। इस क्षेत्र के मध्यकालीन इतिहास को निर्णायक युद्धों की एक श्रृंखला के रूप में, उनके आसपास उठने-गिरने वाले राजवंशों के साथ, याद करें।

तोमर और चौहान: हर्ष के साम्राज्य के बिखरने के बाद इस क्षेत्र में तोमर उभरे; गुर्जर-प्रतिहार राजा महेंद्रपाल के शासनकाल का पिहोवा अभिलेख एक तोमर परिवार का उल्लेख करता है। परंपरा तोमर शासक अनंगपाल को ढिल्लिका (दिल्ली) बसाने और लालकोट दुर्ग बनवाने का, तथा तोमर राजा सूरजपाल को फरीदाबाद के निकट सूरजकुंड जलाशय बनवाने का श्रेय देती है। 12वीं शताब्दी में अजमेर के चौहानों (चाहमानों) ने तोमरों से दिल्ली छीन ली और पृथ्वीराज चौहान तृतीय को यह क्षेत्र विरासत में मिला। सल्तनत काल के संस्कृत अभिलेख, जैसे बलबन के शासनकाल का पालम से मिला अभिलेख, इस भूमि को पहले से ही 'हरियानक' कहते हैं।

तराइन और दिल्ली सल्तनत: तराइन आज का तरावड़ी है, जो करनाल जिले में है। 1191 के तराइन के प्रथम युद्ध में पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने मुहम्मद गौरी को हराया, जो घायल होकर युद्धभूमि से ले जाया गया। गौरी अगले वर्ष लौटा और 1192 के तराइन के द्वितीय युद्ध में उसने पृथ्वीराज को हराकर बंदी बना लिया। उत्तर भारत तुर्क शासन के लिए खुल गया: गौरी के सेनापति कुतुबुद्दीन ऐबक ने दिल्ली पर अधिकार किया और 1206 में दिल्ली सल्तनत की स्थापना की। सल्तनत काल में रज़िया सुल्तान 1240 में कैथल के निकट मारी गईं; फ़िरोज़ शाह तुगलक ने 1354 में हिसार (हिसार-ए-फ़िरोज़ा) और फतेहाबाद बसाए तथा अपने नए नगर की सिंचाई के लिए यमुना से नहर खुदवाई; और 1398 में तैमूर की सेना दिल्ली को लूटने जाते हुए सिरसा, कैथल और पानीपत से गुज़री।

पानीपत का प्रथम युद्ध (1526): 21 अप्रैल 1526 को काबुल के शासक बाबर ने पानीपत में दिल्ली के अंतिम लोदी सुल्तान इब्राहिम लोदी को हराया। बाबर की सेना बहुत छोटी थी, पर उसने उस्ताद अली कुली और मुस्तफ़ा द्वारा संचालित तोपखाने और तुलुगमा (पार्श्व से घेरने की) युद्ध-नीति का प्रयोग किया। इब्राहिम लोदी युद्धभूमि में मारा गया और उसका मकबरा पानीपत में है। इस विजय से मुगल साम्राज्य की नींव पड़ी, और बाबर ने वहाँ काबुली बाग मस्जिद बनवाई। एक वर्ष बाद खानवा (1527) में बाबर ने राणा सांगा को हराया, और मेवात के शासक हसन खाँ मेवाती सांगा की ओर से लड़ते हुए मारे गए। बाबर के पुत्र हुमायूँ को 1540 में भगाने वाले शेरशाह सूरी ने उस महान राजमार्ग का पुनर्निर्माण कराया जिसे आज ग्रांड ट्रंक रोड कहते हैं, और उसके किनारे सरायें बनवाईं; उसके दादा इब्राहिम खाँ सूर नारनौल में उस मकबरे में दफ़न हैं जिसे शेरशाह ने बनवाया।

पानीपत का द्वितीय युद्ध (1556): जनवरी 1556 में हुमायूँ की मृत्यु के बाद हेमू (हेमचंद्र) ने, जो रेवाड़ी का एक व्यापारी था और सूर शासक आदिल शाह का प्रधानमंत्री और सेनापति बन गया था, आगरा और दिल्ली पर अधिकार कर विक्रमादित्य की उपाधि धारण की। 5 नवंबर 1556 को उसकी सेना का सामना पानीपत में बैरम खाँ के नेतृत्व वाली युवा अकबर की सेना से हुआ। हेमू जीत की ओर था, तभी एक तीर उसकी आँख में लगा; वह अचेत होकर गिर पड़ा, उसकी सेना बिखर गई, और उसे पकड़कर उसका सिर काट दिया गया। इस विजय से दिल्ली में मुगल शासन फिर स्थापित हुआ।

पानीपत का तृतीय युद्ध (1761): 14 जनवरी 1761 को अफ़गानिस्तान के अहमद शाह अब्दाली (दुर्रानी) ने सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व वाली मराठा सेना को कुचल दिया। अब्दाली को रुहेला सरदार नजीब-उद-दौला और अवध के शुजा-उद-दौला का साथ मिला; मराठा पक्ष में तोपखाने की कमान इब्राहिम खाँ गार्दी के पास थी। पेशवा बालाजी बाजीराव के पुत्र विश्वासराव और स्वयं भाऊ मारे गए। पानीपत का 'काला अंब' (काले आम का पेड़) स्थल युद्धभूमि को चिह्नित करता है। इस हार ने लगभग एक दशक तक उत्तर में मराठा शक्ति को रोक दिया और दोनों पक्षों को कमज़ोर किया, जिससे अंग्रेज़ों के उदय में सहायता मिली।

सिख, जाट, मराठे और जॉर्ज थॉमस: 1708 में गुरु गोबिंद सिंह की मृत्यु के बाद बंदा सिंह बहादुर ने किसान विद्रोह का नेतृत्व किया, समाना और सरहिंद जीते और वर्तमान यमुनानगर जिले की शिवालिक तलहटी में स्थित लोहगढ़ को अपनी राजधानी बनाया, जहाँ उसने सिख गुरुओं के नाम पर सिक्के चलाए; वह 1715 में पकड़ा गया और 1716 में दिल्ली में उसे मृत्युदंड दिया गया। 1739 में फ़ारस के नादिरशाह ने करनाल में मुगल बादशाह मुहम्मद शाह को हराया। 18वीं शताब्दी में आगे चलकर भरतपुर के राजा सूरजमल ने दक्षिणी हरियाणा तक जाट शक्ति फैलाई, सिख सरदारों ने उत्तर में जींद और कैथल जैसी रियासतें बनाईं, और महादजी सिंधिया के अधीन मराठों ने क्षेत्र के बड़े भाग पर नियंत्रण किया। आयरिश साहसी जॉर्ज थॉमस ने सदी के अंत में हांसी को राजधानी बनाकर एक अल्पकालिक रियासत बनाई, झज्जर के निकट जॉर्जगढ़ (जहाज़गढ़) किला बनवाया, और हिसार की जहाज़ कोठी उसकी याद दिलाती है। द्वितीय आंग्ल-मराठा युद्ध के बाद सुर्जी-अंजनगाँव की संधि (1803) से दौलतराव सिंधिया ने यह क्षेत्र अंग्रेज़ों को सौंप दिया।

उदाहरण

- तराइन (तरावड़ी, करनाल): 1191 में पृथ्वीराज चौहान तृतीय ने मुहम्मद गौरी को हराया; 1192 में गौरी ने पृथ्वीराज को हराकर बंदी बनाया। कुतुबुद्दीन ऐबक ने 1206 में दिल्ली सल्तनत स्थापित की।
- पानीपत का प्रथम युद्ध, 21 अप्रैल 1526: बाबर ने तोपखाने (उस्ताद अली कुली, मुस्तफ़ा) और तुलुगमा नीति से इब्राहिम लोदी को हराया; मुगल साम्राज्य आरंभ; काबुली बाग मस्जिद और इब्राहिम लोदी का मकबरा पानीपत में।
- पानीपत का द्वितीय युद्ध, 5 नवंबर 1556: बैरम खाँ के नेतृत्व में अकबर की सेना ने हेमू (विक्रमादित्य) को हराया, जिसकी आँख में तीर लगा था।
- पानीपत का तृतीय युद्ध, 14 जनवरी 1761: अहमद शाह अब्दाली ने सदाशिवराव भाऊ के नेतृत्व वाले मराठों को हराया; विश्वासराव मारे गए; इब्राहिम खाँ गार्दी ने मराठा तोपखाना संभाला; काला अंब युद्धभूमि का प्रतीक है।
- तोमर: परंपरा के अनुसार अनंगपाल ने ढिल्लिका (दिल्ली) और लालकोट तथा सूरजपाल ने सूरजकुंड बनवाया; 12वीं शताब्दी में अजमेर के चौहानों ने उनसे दिल्ली छीनी।
- फ़िरोज़ शाह तुगलक ने हिसार-ए-फ़िरोज़ा (1354) और फतेहाबाद बसाए, यमुना से नहर निकाली और टोपरा स्तंभ दिल्ली ले गया। रज़िया सुल्तान कैथल के निकट मारी गई (1240)।
- शेरशाह सूरी ने सरायों सहित ग्रांड ट्रंक रोड का पुनर्निर्माण कराया; उसके दादा इब्राहिम खाँ सूर का मकबरा नारनौल में है। हसन खाँ मेवाती बाबर से लड़ते हुए खानवा (1527) में मारे गए।

- बंदा सिंह बहादुर: राजधानी लोहगढ़ (यमुनानगर), गुरुओं के नाम पर सिक्के, 1716 में दिल्ली में मृत्युदंड। 1739 में नादिरशाह ने करनाल में मुहम्मद शाह को हराया।
- जॉर्ज थॉमस: आयरिश साहसी, राजधानी हांसी, झज्जर के निकट जॉर्जगढ़ (जहाज़गढ़) किला, हिसार में जहाज़ कोठी। सुर्जी-अंजनगाँव की संधि (1803) से क्षेत्र अंग्रेज़ों को मिला।

> **त्वरित दोहराव:** तोमर: ढिल्लिका, लालकोट, सूरजकुंड; तराइन (तरावड़ी) 1191 में पृथ्वीराज जीते, 1192 में गौरी जीता; दिल्ली सल्तनत 1206; रज़िया कैथल के निकट मारी गई 1240; हिसार 1354; तैमूर 1398; पानीपत 21 अप्रैल 1526 बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया; 5 नवंबर 1556 बैरम खाँ ने हेमू को हराया; 14 जनवरी 1761 अब्दाली ने सदाशिवराव भाऊ को हराया, काला अंब; नारनौल में इब्राहिम खाँ सूर का मकबरा; बंदा लोहगढ़ में; करनाल 1739 नादिरशाह; जॉर्ज थॉमस हांसी में; सुर्जी-अंजनगाँव 1803।

आधुनिक हरियाणा: ब्रिटिश शासन, 1857 और स्वतंत्रता संग्राम

कंपनी के अधीन: सुर्जी-अंजनगाँव की संधि (1803) से हरियाणा क्षेत्र ईस्ट इंडिया कंपनी के अधीन आया। पहले इसे दिल्ली स्थित ब्रिटिश रेज़िडेंट के अधीन 'दिल्ली क्षेत्र' के भाग के रूप में चलाया गया और 1830 के दशक में उत्तर-पश्चिमी प्रांत के अधीन कर दिया गया। अंग्रेज़ी संरक्षण में कई छोटी रियासतें बनी रहीं, जैसे झज्जर, बल्लभगढ़, फर्रुखनगर, बहादुरगढ़, दुजाना, लोहारू और पटौदी, जबकि जींद और अन्य सिख रियासतें उत्तर में थीं। भारी लगान और अकाल के वर्षों ने किसानों को असंतुष्ट कर दिया था, जिससे 1857 में विद्रोह की तीव्रता समझ में आती है।

हरियाणा में 1857 का विद्रोह: 10 मई 1857 को जब मेरठ में सिपाहियों ने विद्रोह किया और दिल्ली की ओर कूच किया, तो विद्रोह पूरे क्षेत्र में तेज़ी से फैल गया। हांसी और हिसार में सैनिकों ने विद्रोह किया, अनेक समुदायों के किसान इसमें शामिल हुए, और मेवात के मेव किसानों ने सदरुद्दीन के नेतृत्व में हथियार उठाए। हांसी के व्यापारी लाला हुकमचंद जैन को बाद में विद्रोहियों की सहायता करने के कारण फाँसी दी गई। दिल्ली के दक्षिणी मार्ग की रक्षा करने वाले बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह को जनवरी 1858 में दिल्ली में फाँसी दी गई, और झज्जर के नवाब अब्दुर्रहमान खाँ को भी मृत्युदंड दिया गया।

राव तुलाराम और नसीबपुर: दक्षिण में सबसे प्रबल प्रतिरोध रेवाड़ी के निकट रामपुरा के अहीर सरदार राव तुलाराम ने किया, जिन्होंने रेवाड़ी क्षेत्र पर नियंत्रण किया, सेना खड़ी की और दिल्ली के विद्रोहियों को सहायता भेजी। सितंबर 1857 में दिल्ली पर अंग्रेज़ों का पुनः अधिकार होने के बाद कर्नल जेरार्ड के नेतृत्व में एक सैन्य टुकड़ी उनके विरुद्ध भेजी गई। 16 नवंबर 1857 को नारनौल के निकट नसीबपुर में दोनों सेनाएँ भिड़ीं; जेरार्ड मारा गया, पर विद्रोही भारी हानि के साथ पराजित हुए, और राव किशन गोपाल सहित कई नेता युद्धभूमि में शहीद हुए। तुलाराम बच निकले, तात्या टोपे से मिले, बाद में सहायता माँगने अफ़गानिस्तान गए और 1863 में काबुल में उनका निधन हुआ। हरियाणा में उन्हें 1857 के नायक के रूप में सम्मान दिया जाता है।

1858 का दंड: अंग्रेज़ों ने पूरे क्षेत्र को दंडित किया। 1858 में इसे उत्तर-पश्चिमी प्रांत से अलग करके पंजाब प्रांत में मिला दिया गया, जहाँ यह 1966 तक एक उपेक्षित, हिंदी-भाषी दक्षिण-पूर्वी भाग बना रहा। झज्जर, बल्लभगढ़, फर्रुखनगर और बहादुरगढ़ की रियासतें ज़ब्त कर ली गईं; झज्जर के भाग वफ़ादार राजाओं को दिए गए: दादरी जींद को, नारनौल पटियाला को और बावल नाभा को। विद्रोह करने वाले अनेक गाँवों पर जुर्माना लगा या उनकी भूमि छीन ली गई।

सुधारक और आरंभिक नेता: सामाजिक और राजनीतिक जागृति मुख्यतः आर्य समाज के माध्यम से आई, जो स्वामी दयानंद की यात्राओं के बाद इस क्षेत्र में व्यापक रूप से फैला। लाला लाजपत राय ने 1886 में हिसार में वकालत शुरू की, आर्य समाज के लिए काम किया और हिसार नगरपालिका के सदस्य रहे; बाद में वे कांग्रेस के गरम दल (लाल-बाल-पाल) के 'पंजाब केसरी' बने और 1928 में लाहौर में साइमन कमीशन के विरोध के दौरान पुलिस लाठीचार्ज में घायल होने के बाद उनका निधन हुआ। गुड़ियानी गाँव (तब रोहतक जिला, अब रेवाड़ी जिला) के हिंदी पत्रकार बाबू बालमुकुंद गुप्त ने अपने व्यंग्यात्मक 'शिवशंभु के चिट्ठे' में औपनिवेशिक शासन पर प्रहार किया।

सर छोटूराम और यूनियनिस्ट पार्टी: रोहतक जिले के गढ़ी सांपला में जन्मे सर छोटूराम (1881-1945) पंजाब के किसानों की प्रमुख आवाज़ बने। उन्होंने 1916 में रोहतक से साप्ताहिक 'जाट गज़ट' शुरू किया और 1923 में सर फ़ज़्ल-ए-हुसैन के साथ नेशनल यूनियनिस्ट पार्टी की सह-स्थापना की, जो ग्रामीण भूमिधारकों का एक सर्व-समुदाय दल था और जिसने प्रांतीय स्वायत्तता के दौर में पंजाब पर शासन किया। पंजाब सरकार में मंत्री के रूप में उन्होंने ऐसे कानून पारित कराए जिन्होंने किसानों को साहूकारों के कर्ज़ से मुक्त किया और गिरवी भूमि लौटाई, जैसे पंजाब ऋण राहत अधिनियम 1934 और गिरवी भूमि प्रत्यावर्तन अधिनियम 1938; किसानों ने इन्हें 'सुनहरे कानून' कहा। उन्हें 'दीनबंधु' और 'रहबर-ए-आज़म' के रूप में याद किया जाता है।

राष्ट्रीय आंदोलन: यह क्षेत्र राष्ट्रीय संघर्ष के हर चरण में शामिल हुआ। 1919 के रॉलेट सत्याग्रह में रोहतक, हिसार, भिवानी और अंबाला में हड़तालें हुईं। असहयोग आंदोलन के दौरान 1920 में गांधीजी भिवानी आए, और भिवानी के पंडित नेकीराम शर्मा, 'हरियाणा केसरी', ने क्षेत्र में कांग्रेस का नेतृत्व किया, और 1923 में झज्जर के पंडित श्रीराम शर्मा ने राष्ट्रवादी साप्ताहिक 'हरियाणा तिलक' आरंभ किया। नमक सत्याग्रह (1930) और भारत छोड़ो आंदोलन (1942) में पूरे क्षेत्र में गिरफ्तारियाँ हुईं, और हरियाणा के हज़ारों सैनिक सुभाषचंद्र बोस की आज़ाद हिंद फ़ौज में शामिल हुए। स्वतंत्रता के बाद क्षेत्र की रियासतें भारत में मिल गईं; जींद पेप्सू (PEPSU) का भाग बना, जिसका 1956 में पंजाब में विलय हुआ।

उदाहरण

- 1803: सुर्जी-अंजनगाँव की संधि से हरियाणा अंग्रेज़ों के अधीन आया; इसे दिल्ली क्षेत्र और बाद में उत्तर-पश्चिमी प्रांत के भाग के रूप में चलाया गया।
- हरियाणा में 1857: बल्लभगढ़ के राजा नाहर सिंह को दिल्ली में फाँसी (जनवरी 1858); झज्जर के नवाब अब्दुर्रहमान खाँ को मृत्युदंड; हांसी के लाला हुकमचंद जैन को फाँसी।
- नसीबपुर का युद्ध (नारनौल के निकट), 16 नवंबर 1857: राव तुलाराम की सेना बनाम अंग्रेज़; कर्नल जेरार्ड मारा गया पर विद्रोही हारे; तुलाराम का 1863 में काबुल में निधन।

- 1858: दंडस्वरूप क्षेत्र उत्तर-पश्चिमी प्रांत से पंजाब में मिलाया गया; झज्जर, बल्लभगढ़, फर्रुखनगर और बहादुरगढ़ ज़ब्त; दादरी जींद को, नारनौल पटियाला को, बावल नाभा को मिला।
- लाला लाजपत राय: 1886 से हिसार में वकालत; आर्य समाज; 'पंजाब केसरी'; लाहौर में साइमन कमीशन विरोध के लाठीचार्ज के बाद 1928 में निधन।
- सर छोटूराम (1881-1945): जन्म गढ़ी सांपला (रोहतक); जाट गज़ट 1916; 1923 में फ़ज़्ल-ए-हुसैन के साथ यूनियनिस्ट पार्टी की सह-स्थापना; 'दीनबंधु'; किसानों के लिए ऋण-राहत कानून।
- भिवानी के पंडित नेकीराम शर्मा: 'हरियाणा केसरी'। असहयोग आंदोलन के दौरान गांधीजी भिवानी आए (1920)।
- बाबू बालमुकुंद गुप्त (गुड़ियानी, तब रोहतक जिला, अब रेवाड़ी जिला): हिंदी पत्रकार, 'शिवशंभु के चिट्ठे' के लेखक। पंडित श्रीराम शर्मा ने 1923 में साप्ताहिक 'हरियाणा तिलक' आरंभ किया।

> **त्वरित दोहराव:** 1803 सुर्जी-अंजनगाँव; दिल्ली क्षेत्र, फिर उत्तर-पश्चिमी प्रांत; 1857: नाहर सिंह (बल्लभगढ़) और अब्दुर्रहमान खाँ (झज्जर) को मृत्युदंड; रेवाड़ी के राव तुलाराम, नसीबपुर 16 नवंबर 1857, कर्नल जेरार्ड मारा गया, तुलाराम का काबुल में निधन 1863; 1858 में क्षेत्र पंजाब में मिला; लाजपत राय हिसार में 1886; छोटूराम का जन्म गढ़ी सांपला 1881, जाट गज़ट 1916, यूनियनिस्ट पार्टी 1923, दीनबंधु; नेकीराम शर्मा हरियाणा केसरी; गांधीजी भिवानी में 1920; जींद पेप्सू में, पंजाब 1956।

हरियाणा का गठन (1966), प्रशासन और राजव्यवस्था

माँग की पृष्ठभूमि: 1858 के बाद हरियाणा क्षेत्र पंजाब का हिंदी-भाषी दक्षिण-पूर्वी भाग था, जिसका शासन लाहौर से और विभाजन के बाद शिमला तथा फिर चंडीगढ़ से चलता था। इसके नेताओं की शिकायत थी कि नौकरियों, सिंचाई और विकास में इसकी उपेक्षा होती है। स्वतंत्रता के बाद मास्टर तारा सिंह और बाद में संत फतेह सिंह के नेतृत्व में पंजाबी सूबा आंदोलन ने पंजाबी-भाषी राज्य की माँग की। पंजाब को एक रखने के प्रयासों, जैसे सच्चर फ़ॉर्मूला (1949) और क्षेत्रीय फ़ॉर्मूला (1956), ने भाषा और विकास के लिए इसे हिंदी और पंजाबी क्षेत्रों में बाँटा, पर माँग समाप्त नहीं हुई, और 1955 के राज्य पुनर्गठन आयोग ने अलग पंजाबी राज्य की सिफ़ारिश नहीं की।

हुकम सिंह समिति और शाह आयोग: 1965 में लोकसभा अध्यक्ष सरदार हुकम सिंह की अध्यक्षता में एक संसदीय समिति बनी, जिसने पंजाब को भाषाई आधार पर पुनर्गठित करने की सिफ़ारिश की। अप्रैल 1966 में केंद्र सरकार ने न्यायमूर्ति जे.सी. शाह की अध्यक्षता में पंजाब सीमा आयोग नियुक्त किया, जिसके सदस्य एस. दत्त और एम.एम. फिलिप थे, ताकि 1961 की जनगणना के आधार पर पंजाबी-भाषी और हिंदी-भाषी क्षेत्रों के बीच सीमा खींची जा सके। मई 1966 में सौंपी गई इसकी रिपोर्ट ने सिफ़ारिश की कि चंडीगढ़ सहित खरड़ तहसील हरियाणा को मिले; सरकार ने यह भाग स्वीकार नहीं किया और इसके स्थान पर चंडीगढ़ को केंद्रशासित प्रदेश बना दिया।

पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966: संसद ने सितंबर 1966 में पंजाब पुनर्गठन अधिनियम पारित किया। 1 नवंबर 1966 से हिंदी-भाषी दक्षिण-पूर्वी जिले भारत का 17वाँ राज्य हरियाणा बने; पंजाबी-भाषी क्षेत्र पंजाब के पास रहे; पहाड़ी क्षेत्र तत्कालीन केंद्रशासित प्रदेश हिमाचल प्रदेश को मिले; और चंडीगढ़ केंद्रशासित प्रदेश बनकर पंजाब और हरियाणा दोनों की राजधानी बना। इसीलिए 1 नवंबर को हरियाणा दिवस मनाया जाता है। पंडित भगवत दयाल शर्मा प्रथम मुख्यमंत्री और धर्म वीर प्रथम राज्यपाल बने, तथा श्रीमती रन्नो देवी विधान सभा की प्रथम अध्यक्ष बनीं। 24 जुलाई 1985 के राजीव-लोंगोवाल समझौते में हिंदी-भाषी क्षेत्रों के बदले चंडीगढ़ पंजाब को देने का वादा हुआ, पर यह हस्तांतरण कभी नहीं हुआ।

विधायिका और न्यायालय: हरियाणा में एकसदनीय विधायिका, विधान सभा, है जिसमें 90 सीटें हैं, जिनमें से 17 अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित हैं; अनुसूचित जनजातियों के लिए कोई सीट आरक्षित नहीं है क्योंकि राज्य में कोई जनजाति अधिसूचित नहीं है। विधान सभा चंडीगढ़ के कैपिटल कॉम्प्लेक्स में पंजाब विधान सभा वाले उसी भवन में बैठती है। हरियाणा लोकसभा के लिए 10 सदस्य चुनता है, जिनमें अंबाला और सिरसा अनुसूचित जातियों के लिए आरक्षित हैं, और राज्यसभा में 5 सदस्य भेजता है। अनुच्छेद 231, जो संसद को दो या अधिक राज्यों के लिए एक साझा उच्च न्यायालय स्थापित करने की अनुमति देता है, के अंतर्गत पंजाब, हरियाणा और चंडीगढ़ एक ही पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय साझा करते हैं, जो चंडीगढ़ में स्थित है। हरियाणा लोक सेवा आयोग और ग्रुप C पदों पर भर्ती करने वाला हरियाणा कर्मचारी चयन आयोग राज्य के प्रमुख भर्ती निकाय हैं।

राजनीतिक पड़ाव: हरियाणा की आरंभिक राजनीति ने भारत को एक प्रसिद्ध मुहावरा दिया। 1967 में हसनपुर (अब होडल) सीट के विधायक गया लाल ने थोड़े ही समय में तीन बार दल बदला, जिससे 'आया राम गया राम' मुहावरा बना, और दलबदल की इस लहर के कारण नवंबर 1967 में राज्य में पहली बार राष्ट्रपति शासन लगा। दलबदल पर अंततः 52वें संशोधन (1985) से अंकुश लगाया गया, जिसने संविधान में दसवीं अनुसूची (दलबदल-विरोधी कानून) जोड़ी। हरियाणा राजभाषा अधिनियम, 1969 के अंतर्गत हिंदी राजभाषा है, और 2010 से पंजाबी को द्वितीय भाषा का दर्जा प्राप्त है। 2015 में हरियाणा ने अपने पंचायती राज अधिनियम, 1994 में संशोधन कर पंचायत चुनाव लड़ने वाले अभ्यर्थियों के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता अनिवार्य की, और सर्वोच्च न्यायालय ने राजबाला बनाम हरियाणा राज्य (2015) में इसे वैध ठहराया।

राज्य प्रतीक और पहचान: राज्य पशु काला हिरण, राज्य पक्षी काला तीतर, राज्य वृक्ष पीपल और राज्य पुष्प कमल है। जनगणना 2011 में लिंगानुपात 879 महिलाएँ प्रति 1,000 पुरुष दर्ज हुआ, जो राज्यों में सबसे कम था, और शिशु लिंगानुपात 834 था; आंशिक रूप से इसी कारण 22 जनवरी 2015 को पानीपत से 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' योजना शुरू की गई।

उदाहरण

- हरियाणा दिवस: 1 नवंबर 1966, पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, 1966 के अंतर्गत; हरियाणा भारत का 17वाँ राज्य बना।
- हुकम सिंह संसदीय समिति (1965-66) ने भाषाई पुनर्गठन की सिफ़ारिश की; शाह आयोग (न्यायमूर्ति जे.सी. शाह, 1966) ने 1961 की जनगणना के आधार पर सीमा खींची।

- चंडीगढ़: केंद्रशासित प्रदेश और पंजाब-हरियाणा की साझा राजधानी; राजीव-लोंगोवाल समझौते (1985) में इसे पंजाब को देने का वादा हुआ, पर हस्तांतरण कभी नहीं हुआ।
- प्रथम: मुख्यमंत्री पंडित भगवत दयाल शर्मा; राज्यपाल धर्म वीर; विधान सभा अध्यक्ष श्रीमती शान्नो देवी।
- विधान सभा: एकसदनीय, 90 सीटें, 17 अनुसूचित जातियों (SC) के लिए आरक्षित, अनुसूचित जनजातियों (ST) के लिए कोई नहीं। लोकसभा: 10 सीटें (अंबाला और सिरसा SC के लिए आरक्षित)। राज्यसभा: 5।
- चंडीगढ़ में पंजाब एवं हरियाणा उच्च न्यायालय: पंजाब, हरियाणा और केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ के लिए अनुच्छेद 231 के अंतर्गत साझा उच्च न्यायालय।
- 'आया राम गया राम': 1967 में हसनपुर (अब होडल) के विधायक गया लाल के तीन बार दल बदलने से बना; 52वें संशोधन (1985) ने दलबदल-विरोधी दसवीं अनुसूची जोड़ी।
- राजभाषा हिंदी (हरियाणा राजभाषा अधिनियम, 1969); 2010 से पंजाबी द्वितीय भाषा है।
- राजबाला बनाम हरियाणा राज्य (2015): सर्वोच्च न्यायालय ने पंचायत अभ्यर्थियों के लिए न्यूनतम शैक्षिक योग्यता को वैध ठहराया।
- राज्य प्रतीक: काला हिरण (पशु), काला तीतर (पक्षी), पीपल (वृक्ष), कमल (पुष्प)। 'बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ' 22 जनवरी 2015 को पानीपत से शुरू हुई।

> **त्वरित दोहराव:** पंजाबी सूबा आंदोलन; सच्चर (1949) और क्षेत्रीय (1956) फ़ॉर्मूले; हुकम सिंह समिति; शाह आयोग 1966 (1961 की जनगणना का आधार); पंजाब पुनर्गठन अधिनियम 1966; हरियाणा 17वाँ राज्य, 1 नवंबर 1966; चंडीगढ़ केंद्रशासित प्रदेश और साझा राजधानी; प्रथम मुख्यमंत्री भगवत दयाल शर्मा, राज्यपाल धर्म वीर, अध्यक्ष श्रीमती शान्नो देवी; विधान सभा 90 (17 SC), लोकसभा 10 (अंबाला, सिरसा SC), राज्यसभा 5; साझा उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 231); आया राम गया राम 1967; हिंदी राजभाषा (1969 अधिनियम); बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पानीपत 2015।

हरियाणा का भूगोल: स्थिति, क्षेत्रफल और भौतिक प्रदेश

स्थिति और विस्तार: हरियाणा उत्तर-पश्चिमी भारत का एक स्थलरुद्ध राज्य है, जो उत्तर में शिवालिक पहाड़ियों और दक्षिण में अरावली पहाड़ियों तथा थार मरुस्थल के किनारे के बीच के मैदान में स्थित है। इसका क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किमी है, जो भारत के क्षेत्रफल का लगभग 1.34 प्रतिशत है; इस प्रकार यह पंजाब से थोड़ा छोटा और केरल से थोड़ा बड़ा है। जनगणना 2011 में यहाँ लगभग 2.54 करोड़ लोग, 573 व्यक्ति प्रति वर्ग किमी का जनसंख्या घनत्व और 75.55 प्रतिशत साक्षरता दर दर्ज हुई।

पड़ोसी: हरियाणा की सीमा उत्तर-पश्चिम में पंजाब और केंद्रशासित प्रदेश चंडीगढ़ से, उत्तर में हिमाचल प्रदेश से, और दक्षिण तथा दक्षिण-पश्चिम में राजस्थान से लगती है; पूर्व में यमुना इसे उत्तर प्रदेश से और सुदूर उत्तर-पूर्व में थोड़ी दूरी तक उत्तराखंड से अलग करती है। यह राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र दिल्ली को तीन ओर, उत्तर, पश्चिम और दक्षिण, से घेरता है, इसीलिए गुरुग्राम, फरीदाबाद, सोनीपत और झज्जर सहित राज्य का बड़ा भाग राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र (NCR) में आता है। यमुना उत्तर प्रदेश के साथ लगभग पूरी पूर्वी सीमा बनाती है।

शिवालिक पहाड़ियाँ: उत्तर-पूर्व में पंचकूला और यमुनानगर जिलों तथा अंबाला के किनारे पर शिवालिक पहाड़ियाँ हैं, जो हिमालय की सबसे नवीन और सबसे बाहरी श्रेणी हैं। ये नरम बलुआ पत्थर, मिट्टी और ढीले संगुटिकाश्म (कांग्लोमरेट) से बनी हैं, इसलिए 'चो' कहलाने वाली मौसमी जलधाराएँ गहरी नालियाँ काटती हैं और नीचे के खेतों पर रेत फैला देती हैं, जिससे गंभीर मृदा अपरदन होता है। पंचकूला जिले की मोरनी पहाड़ियाँ राज्य का सबसे ऊँचा भाग हैं; लगभग 1,467 मीटर ऊँची करोह चोटी हरियाणा का सर्वोच्च बिंदु है, और टिक्कर ताल झीलों वाला मोरनी राज्य का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल (हिल स्टेशन) है। पहाड़ियों के नीचे मोटे कणों वाली, बजरीयुक्त मिट्टी की एक संकरी तलहटी पट्टी है।

घग्घर-यमुना का मैदान: हरियाणा का अधिकांश भाग यमुना, घग्घर और उनकी धाराओं द्वारा बनाया गया एक विशाल जलोढ़ मैदान है, जिसका ढलान दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम की ओर बहुत हल्का है। इसके दो भाग हैं। खादर यमुना और अन्य नदियों के किनारे नई जलोढ़ मिट्टी की निचली पट्टी है, जो बाढ़ से नवीकृत होती रहती है। बांगर पुरानी जलोढ़ मिट्टी का ऊँचा भाग है जहाँ बाढ़ नहीं पहुँचती; यह रोहतक, जींद और कैथल के आसपास मध्य हरियाणा की मुख्य कृषि भूमि है और इसी के नाम पर बांगरू बोली का नाम पड़ा। समतल और उपजाऊ होने के कारण इसी मैदान में राज्य के अधिकांश खेत, नगर और लोग हैं।

अर्ध-मरुस्थलीय रेतीला मैदान: दक्षिण-पश्चिम में सिरसा, हिसार, भिवानी और महेंद्रगढ़ में यह मैदान थार मरुस्थल से मिल जाता है। यहाँ रेतीली मिट्टी, 'टिब्बे' कहलाने वाले कम ऊँचाई के, खिसकते रेत के टीले, अल्प वर्षा और धूल भरी आँधियाँ आम हैं। राजस्थान से लगा यह क्षेत्र 'बागड़' कहलाता है और इसी के नाम पर बागड़ी बोली का नाम पड़ा। जहाँ सिंचाई सीमित है, वहाँ बाजरा, ग्वार, सरसों और चना यहाँ की विशिष्ट फसलें हैं।

अरावली पहाड़ियाँ: दक्षिण में विश्व के सबसे पुराने वलित पर्वतों में गिनी जाने वाली अरावली की नीची श्रेणियाँ महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, गुरुग्राम, फरीदाबाद और नूंह से होकर दिल्ली में 'रिज' के रूप में आगे बढ़ती हैं। ये पथरीली, शुष्क और कटी-फटी हैं, इन पर झाड़ीदार वन हैं, और ये दिल्ली की ओर मरुस्थल के प्रसार में बाधा का काम करती हैं। नारनौल के निकट ढोसी पहाड़ी, जो च्यवन ऋषि से जुड़ी है, एक मृत ज्वालामुखी बताई जाती है। परीक्षाओं में प्रयुक्त चार-भागीय विभाजन याद रखें: शिवालिक पहाड़ियाँ (उत्तर-पूर्व), घग्घर-यमुना मैदान (मध्य), अर्ध-मरुस्थलीय रेतीला मैदान (दक्षिण-पश्चिम) और अरावली पहाड़ियाँ (दक्षिण)।

उदाहरण

- क्षेत्रफल 44,212 वर्ग किमी, भारत का लगभग 1.34 प्रतिशत; पंजाब से थोड़ा छोटा और केरल से थोड़ा बड़ा; स्थलरुद्ध राज्य।
- पड़ोसी: पंजाब और चंडीगढ़ (उत्तर-पश्चिम), हिमाचल प्रदेश (उत्तर), उत्तर प्रदेश और थोड़ी दूरी तक उत्तराखंड (पूर्व, यमुना के पार), राजस्थान (दक्षिण और दक्षिण-पश्चिम); दिल्ली तीन ओर से घिरी है।
- जनगणना 2011: जनसंख्या लगभग 2.54 करोड़, घनत्व 573 प्रति वर्ग किमी, साक्षरता 75.55 प्रतिशत।

- शिवालिक पहाड़ियाँ (पंचकूला, यमुनानगर): 'चो' नामक मौसमी जलधाराओं से कटती नरम चट्टानें; मोरनी पहाड़ियों में करोह चोटी (लगभग 1,467 मीटर), हरियाणा का सर्वोच्च बिंदु।
- मोरनी (पंचकूला): हरियाणा का एकमात्र पर्वतीय पर्यटन स्थल, जुड़वाँ टिक्कर ताल झीलों के साथ।
- घग्घर-यमुना मैदान: खादर = नदियों के किनारे निचली, नई, बाढ़ से नवीकृत जलोढ़ मिट्टी; बांगर = ऊँची, पुरानी जलोढ़ मिट्टी; अधिकांश कृषि भूमि और जनसंख्या।
- अर्ध-मरुस्थलीय रेतीला मैदान (सिरसा, हिसार, भिवानी, महेंद्रगढ़): रेत के टीले (टिब्बे), अल्प वर्षा; बागड़ क्षेत्र के नाम पर बागड़ी बोली।
- अरावली पहाड़ियाँ (महेंद्रगढ़, रेवाड़ी, गुरुग्राम, फरीदाबाद, नूंह): सबसे पुराने वलित पर्वतों में; नारनौल के निकट ढोसी पहाड़ी च्यवन ऋषि से जुड़ी है।

> **त्वरित दोहराव:** स्थलरुद्ध; 44,212 वर्ग किमी (भारत का लगभग 1.34 प्रतिशत); सीमाएँ पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड (यमुना के पार), राजस्थान से; दिल्ली को तीन ओर से घेरता है; जनगणना 2011: 2.54 करोड़, घनत्व 573, साक्षरता 75.55 प्रतिशत; चार प्रदेश: शिवालिक (उत्तर-पूर्व, चो, मोरनी पहाड़ियाँ, करोह चोटी लगभग 1,467 मीटर), घग्घर-यमुना मैदान (खादर, बांगर), रेतीला मैदान (दक्षिण-पश्चिम, बागड़), अरावली (दक्षिण, ढोसी पहाड़ी)।

हरियाणा की नदियाँ, नहरें और झीलें

मौसमी नदियों का प्रदेश: हरियाणा में केवल एक बारहमासी नदी है, यमुना। शेष सभी मौसमी, वर्षा-पोषित धाराएँ हैं जो शिवालिक या अरावली से निकलती हैं, मानसून में भरकर बहती हैं और बाकी वर्ष सिकुड़ जाती हैं या सूख जाती हैं; इनमें से कई कभी समुद्र तक नहीं पहुँचतीं और रेतीले मैदानों में लुप्त हो जाती हैं। अपवाह तंत्र के दो भाग हैं: पूर्व में यमुना तंत्र, जो गंगा बेसिन का भाग है, और उत्तर तथा पश्चिम में आंतरिक घग्घर तंत्र, जो प्राचीन सरस्वती से जुड़ा है। नदियाँ कम होने के कारण खेती नहरों और नलकूपों पर निर्भर है।

यमुना: यमुना उत्तराखंड के यमुनोत्री हिमनद से निकलती है और यमुनानगर जिले में हरियाणा में प्रवेश करती है, जहाँ पुराने ताजेवाला हेडवर्क्स का स्थान लेने वाला हथनीकुंड बैराज इसका जल पश्चिमी यमुना नहर और उत्तर प्रदेश की पूर्वी यमुना नहर में मोड़ता है। फिर यह पूर्वी सीमा के साथ दक्षिण की ओर यमुनानगर, करनाल, पानीपत और सोनीपत के पास से बहती है, दिल्ली से गुज़रती है और फरीदाबाद तथा पलवल के पास से बहकर उत्तर प्रदेश में चली जाती है। इसका निचला बाढ़ का मैदान उपजाऊ है, पर भारी मानसून में बाढ़ग्रस्त हो जाता है।

घग्घर और उसकी धाराएँ: घग्घर हिमाचल प्रदेश की शिवालिक पहाड़ियों से निकलती है, पंचकूला के निकट हरियाणा में प्रवेश करती है, पंजाब से होकर घूमती है और फिर दक्षिण-पश्चिम की ओर फतेहाबाद और सिरसा से बहकर राजस्थान की रेत में लुप्त हो जाती है; आगे इसके सूखे मार्ग को हकरा कहते हैं, इसीलिए पूरे तंत्र को घग्घर-हकरा कहा जाता है। इसे व्यापक रूप से वैदिक सरस्वती माना जाता है। सिरसा के निकट ओटू बैराज इसका जल ओटू जलाशय में संचित करता है और स्थानीय नहरों को जल देता है। इसकी धाराओं में कौशल्या, जिस पर पिंजौर के निकट बाँध है, अंबाला छावनी के पास से बहने वाली टांगरी, और हिमाचल प्रदेश से निकलकर शाहाबाद से गुज़रने वाली मारकंडा शामिल हैं। परंपरा की सरस्वती यमुनानगर जिले के आदि बद्री से निकलती है, और वेदों की दृषद्वती मानी जाने वाली चौटांग उत्तर-मध्य मैदान को पार करती है।

दक्षिण की नदियाँ: दक्षिण में धाराएँ राजस्थान की अरावली से निकलती हैं। साहिबी रेवाड़ी जिले से प्रवेश करती है, जहाँ इस पर मसानी बैराज है, फिर उत्तर-पूर्व में दिल्ली की ओर बहती है और वहाँ नजफ़गढ़ नाले के रूप में आगे बढ़कर यमुना में मिलती है। दोहान और कृष्णावती महेंद्रगढ़ जिले से बहती हैं। ये सभी वर्ष के अधिकांश समय सूखी रहती हैं।

नहरें: हथनीकुंड से निकलने वाली पश्चिमी यमुना नहर इस क्षेत्र की सबसे पुरानी नहर प्रणाली है। इसका मूल वह नहर है जिसे फ़िरोज़ शाह तुगलक ने 14वीं शताब्दी में हिसार की सिंचाई के लिए खुदवाया था; शाहजहाँ के समय अली मर्दान खाँ ने दिल्ली तक जल पहुँचाने के लिए इसका जीर्णोद्धार किया; और अंग्रेज़ों ने 19वीं शताब्दी में इसका पुनर्निर्माण किया। इसकी मुख्य शाखाएँ दिल्ली, हांसी और सिरसा शाखाएँ हैं। भाखड़ा नहर प्रणाली भाखड़ा-नंगल परियोजना से सतलुज का जल लाती है: भाखड़ा मुख्य नहर हरियाणा में प्रवेश कर सिरसा, फतेहाबाद और हिसार जैसे शुष्क उत्तर-पश्चिमी जिलों की सिंचाई करती है, और इस परियोजना का संचालन भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड करता है। जवाहरलाल नेहरू उठान योजना जैसी उठान (लिफ़्ट) सिंचाई योजनाएँ दक्षिण की ऊँची, शुष्क भूमि तक जल पहुँचाती हैं, और ओखला बैराज से निकलने वाली आगरा नहर फरीदाबाद और पलवल को जल देती है।

SYL नहर विवाद: सतलुज-यमुना लिंक नहर की योजना रावी-ब्यास के अतिरिक्त जल में हरियाणा के हिस्से को सतलुज से यमुना तंत्र तक ले जाने के लिए बनी थी। इसकी लंबाई 214 किमी है, जिसमें 122 किमी पंजाब में और 92 किमी हरियाणा में है। हरियाणा ने अपना भाग पूरा कर लिया, पर पंजाब का भाग अधूरा रह गया। 1981 के जल-बँटवारा समझौते के बाद 1982 में पटियाला जिले के कपूरी में इसकी आधारशिला रखी गई; बाद में पंजाब ने पंजाब समझौता समापन अधिनियम (Punjab Termination of Agreements Act), 2004 पारित किया, जिसे सर्वोच्च न्यायालय ने 2016 में राष्ट्रपति के संदर्भ पर दी गई अपनी राय में अमान्य ठहराया। यह विवाद दशकों से चला आ रहा है, इसलिए परीक्षाएँ किसी अंतिम निष्कर्ष के बजाय इसकी लंबाई, मार्ग और संबंधित राज्यों के बारे में पूछती हैं।

झीलें और पवित्र सरोवर: हरियाणा की अधिकांश झीलें कृत्रिम या मौसमी हैं। फरीदाबाद की बड़खल झील लंबे समय तक नौका-विहार के लिए लोकप्रिय रही, जबकि पास का सूरजकुंड एक प्राचीन सीढ़ीदार, रंगमंच-आकार (एम्फ़ीथिएटर जैसा) जलाशय है जिसका श्रेय तोमर राजा सूरजपाल को दिया जाता है। दमदमा झील गुरुग्राम जिले में सोहना के निकट है, रोहतक की तिलयार झील के पास चिड़ियाघर है, करनाल की कर्ण झील का नाम महाभारत के कर्ण पर है, और ब्लू बर झील हिसार में है। कुरुक्षेत्र में ब्रह्म सरोवर और सन्निहित सरोवर विशाल पवित्र सरोवर हैं जहाँ सूर्य ग्रहण के समय लाखों श्रद्धालु स्नान करते हैं, और टिक्कर ताल झीलें मोरनी पहाड़ियों में हैं।

उदाहरण

- यमुना हरियाणा की एकमात्र बारहमासी नदी है; यह यमुनानगर में प्रवेश करती है, उत्तर प्रदेश के साथ पूर्वी सीमा बनाती है और हथनीकुंड बैराज (ताजेवाला का उत्तराधिकारी) पर पश्चिमी यमुना नहर को जल देती है।
- पश्चिमी यमुना नहर: हिसार की सिंचाई के लिए फ़िरोज़ शाह तुगलक (14वीं शताब्दी) ने शुरू की, शाहजहाँ के समय अली मर्दान खाँ ने जीर्णोद्धार किया, अंग्रेज़ों ने पुनर्निर्माण किया; दिल्ली, हांसी और सिरसा शाखाएँ।
- घग्घर: हिमाचल प्रदेश की शिवालिक से निकलती है, पंचकूला के निकट प्रवेश करती है, राजस्थान में लुप्त हो जाती है, आगे का सूखा मार्ग हकरा कहलाता है; सिरसा के निकट ओटू बैराज; धाराएँ कौशल्या, टांगरी और मारकंडा।
- साहिबी: राजस्थान की अरावली से निकलती है, रेवाड़ी में मसानी बैराज, दिल्ली में नजफ़गढ़ नाले के रूप में पहुँचती है। दोहान और कृष्णावती महेंद्रगढ़ से बहती हैं।
- भाखड़ा मुख्य नहर: भाखड़ा-नंगल परियोजना से सतलुज का जल सिरसा, फतेहाबाद और हिसार तक लाती है; प्रबंधन भाखड़ा ब्यास प्रबंधन बोर्ड (BBMB) द्वारा।
- SYL नहर: 214 किमी (122 किमी पंजाब में, 92 किमी हरियाणा में); आधारशिला कपूरी (1982); हरियाणा का भाग बना, पंजाब का अधूरा रह गया; पंजाब का 2004 का अधिनियम सर्वोच्च न्यायालय ने अमान्य ठहराया (2016)।
- जिलेवार झीलें: बड़खल और सूरजकुंड (फरीदाबाद), दमदमा (गुरुग्राम, सोहना के निकट), तिलयार (रोहतक), कर्ण झील (करनाल), ब्लू बर्ड (हिसार), टिक्कर ताल (मोरनी, पंचकूला)।
- ब्रह्म सरोवर और सन्निहित सरोवर (कुरुक्षेत्र): पवित्र सरोवर जहाँ सूर्य ग्रहण पर श्रद्धालु स्नान करते हैं। आदि बद्री (यमुनानगर) सरस्वती का पारंपरिक उद्गम है।

> **त्वरित दोहराव:** यमुना एकमात्र बारहमासी नदी, यमुनानगर में प्रवेश, हथनीकुंड बैराज (ताजेवाला के स्थान पर); पश्चिमी यमुना नहर (फ़िरोज़ शाह तुगलक, अली मर्दान खाँ, अंग्रेज़; दिल्ली, हांसी, सिरसा शाखाएँ); घग्घर (घग्घर-हकरा तंत्र, ओटू बैराज, कौशल्या, टांगरी, मारकंडा); साहिबी (मसानी बैराज, नजफ़गढ़ नाला); भाखड़ा मुख्य नहर, BBMB; SYL 214 किमी (122 पंजाब, 92 हरियाणा), कपूरी 1982, लंबा विवाद; झीलें बड़खल, सूरजकुंड, दमदमा, तिलयार, कर्ण, ब्लू बर्ड; ब्रह्म सरोवर।

हरियाणा की जलवायु, मृदा, वन और वन्यजीव

जलवायु: हरियाणा की जलवायु महाद्वीपीय, उपोष्णकटिबंधीय है, जो दक्षिण-पश्चिम में अर्ध-शुष्क और उत्तर-पूर्व में उप-आर्द्र है। समुद्र से दूर होने के कारण यहाँ तापमान चरम पर रहते हैं। ग्रीष्म ऋतु (अप्रैल से जून) बहुत गर्म और शुष्क होती है, जब दक्षिण-पश्चिम में तापमान प्रायः 45°C से ऊपर चला जाता है, 'लू' नामक गर्म हवाएँ चलती हैं और धूल भरी आँधियाँ आती हैं। शीत ऋतु (दिसंबर से फ़रवरी) ठंडी होती है, जिसमें पाला और कोहरा पड़ता है, और जनवरी सबसे ठंडा महीना है। दक्षिण-पश्चिम मानसून जून के अंत के आसपास पहुँचता है और वर्ष की अधिकांश वर्षा जुलाई से सितंबर के बीच लाता है, जबकि पश्चिमी विक्षोभ सर्दियों में हल्की वर्षा लाते हैं जो गेहूँ की फसल के लिए लाभदायक है।

वर्षा का प्रतिरूप: वर्षा उत्तर-पूर्व से दक्षिण-पश्चिम की ओर घटती है। पंचकूला, यमुनानगर और अंबाला की शिवालिक तलहटी में सबसे अधिक वर्षा होती है, प्रायः 1,000 मिमी प्रति वर्ष से अधिक, जबकि सिरसा और रेतीले दक्षिण-पश्चिम में सबसे कम, लगभग 300 मिमी या उससे भी कम। चूँकि राज्य के अधिकांश भाग में वर्षा कम और अनिश्चित है, इसलिए नहरों और नलकूपों से सिंचाई आवश्यक है, और सूखे की सबसे अधिक मार दक्षिण-पश्चिमी जिलों पर पड़ती है।

मृदा: हरियाणा के अधिकांश भाग में नदियों द्वारा बिछाई गई जलोढ़ मिट्टी है। बाढ़ के मैदानों की खादर मिट्टी नई और उपजाऊ है, और ऊँचे मैदान की बांगर मिट्टी पुरानी दोमट है जो सिंचाई से बहुत उत्पादक बन जाती है। दक्षिण-पश्चिम में रेतीली मरुस्थलीय मिट्टी है जो कम पानी रोकती है, शिवालिक में 'चो' से बुरी तरह कटी पतली, पथरीली मिट्टी है, और अरावली क्षेत्रों में पथरीली, उथली मिट्टी है। मध्य हरियाणा के कुछ भागों में अत्यधिक सिंचाई और खराब जल-निकासी से जलभराव और 'कल्लर' या 'रेह' कहलाने वाले लवणीय या क्षारीय क्षेत्र बन गए हैं; करनाल स्थित केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान ऐसी भूमि के सुधार पर, प्रायः जिप्सम की सहायता से, काम करता है।

वन और वनस्पति: हरियाणा भारत के सबसे कम वन वाले राज्यों में से एक है; प्राकृतिक वन मुख्यतः शिवालिक, मोरनी पहाड़ियों और अरावली में बचे हैं। शिवालिक में उष्णकटिबंधीय शुष्क पर्णपाती वन हैं, जिनमें कलेसर क्षेत्र में साल, खैर और शीशम हैं, और मोरनी की ऊँची ढलानों पर चीड़ उगता है; अरावली और दक्षिण-पश्चिम में कीकर (बबूल), खेजड़ी और ढाक के काँटेदार और झाड़ीदार वन हैं। वन भूमि इतनी कम होने के कारण राज्य सड़कों, नहरों और रेल लाइनों के किनारे वृक्षारोपण और कृषि वानिकी पर निर्भर है, जैसे उत्तर में किसानों द्वारा यमुनानगर के प्लाईवुड उद्योग के लिए उगाए जाने वाले पॉपलर और यूकेलिप्टस।

राष्ट्रीय उद्यान: हरियाणा के राष्ट्रीय उद्यान सुल्तानपुर और कलेसर हैं। गुरुग्राम जिले में फर्रुखनगर के निकट सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान एक उथली मौसमी झील के चारों ओर विकसित हुआ; इसे पहली बार 1970 के दशक के आरंभ में पक्षी विहार के रूप में संरक्षित किया गया और बाद में राष्ट्रीय उद्यान बनाया गया, और सर्दियों में यहाँ धारीदार सिर वाले हंस (बार-हेडेड गूज़), नॉर्दर्न पिनटेल और ग्रेटर फ्लेमिंगो जैसे प्रवासी पक्षी आते हैं। यमुनानगर जिले में हिमाचल प्रदेश से सटी शिवालिक तलहटी में स्थित कलेसर राष्ट्रीय उद्यान 2003 में घोषित हुआ; यह साल वन की रक्षा करता है जिसमें तेंदुए, सांभर और लाल जंगली मुर्गे रहते हैं, और कभी-कभी पड़ोसी वनों से हाथी भी आ जाते हैं।

अभयारण्य और प्रजनन केंद्र: झज्जर जिले का भिंडावास वन्यजीव अभयारण्य नहर के जल से पोषित एक मानव-निर्मित आर्द्रभूमि है और हरियाणा की सबसे बड़ी आर्द्रभूमि है; पास के खापरवास अभयारण्य के साथ यह सर्दियों में हज़ारों प्रवासी जलपक्षियों को आश्रय देता है। अन्य अभयारण्यों में पंचकूला का बीड़ शिकारगाह, कुरुक्षेत्र का छिलछिला, कैथल का सरस्वती, सिरसा का अबूबशहर और रेवाड़ी का नाहड़ शामिल हैं। बॉम्बे नेचुरल हिस्ट्री सोसाइटी के सहयोग से चलने वाला पिंजौर का जटायु संरक्षण प्रजनन केंद्र संकटग्रस्त जिप्स गिद्धों के प्रजनन का भारत का पहला केंद्र था, और कुरुक्षेत्र के निकट भोर सैदां में मगरमच्छ प्रजनन केंद्र है।

वन्यजीव और उनके रक्षक: राज्य पशु काला हिरण मुख्यतः हिसार और फतेहाबाद जिलों के बिश्नोई गाँवों के आसपास बचा है, जहाँ समुदाय की आस्था पशुओं और पेड़ों को हानि पहुँचाने से रोकती है। नीलगाय, मोर, गीदड़, खरगोश और राज्य पक्षी काला तीतर मैदानों में व्यापक रूप से मिलते हैं, जबकि तेंदुए, सांभर और काकड़ (बार्किंग डियर) शिवालिक में रहते हैं। पंचकूला की मोरनी पहाड़ियाँ हरियाणा का मुख्य पहाड़ी वन और पक्षियों तथा तेंदुओं का आश्रय बनी हुई हैं।

उदाहरण

- जलवायु: महाद्वीपीय और उपोष्णकटिबंधीय; लू और आँधियों वाली गर्म शुष्क ग्रीष्म ऋतु, कोहरे वाली ठंडी शीत ऋतु; अधिकांश वर्षा दक्षिण-पश्चिम मानसून (जुलाई-सितंबर) से, सर्दियों में पश्चिमी विक्षोभ से हल्की वर्षा।
- वर्षा उत्तर-पूर्व (शिवालिक तलहटी, 1,000 मिमी से अधिक) से दक्षिण-पश्चिम (सिरसा, लगभग 300 मिमी या कम) की ओर घटती है।
- मृदा: मैदानों में जलोढ़ खादर और बांगर, दक्षिण-पश्चिम में रेतीली, शिवालिक में पथरीली; लवणीय-क्षारीय (कल्लर, रेह) क्षेत्र; करनाल का CSSRI भूमि-सुधार पर काम करता है।
- वन आवरण भारत में सबसे कम में से है: कलेसर में साल, मोरनी पहाड़ियों में चीड़, दक्षिण-पश्चिम में कीकर और खेजड़ी के काँटेदार वन।
- सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान (गुरुग्राम): सर्दियों में प्रवासी पक्षियों वाला आर्द्रभूमि पक्षी उद्यान। कलेसर राष्ट्रीय उद्यान (यमुनानगर): शिवालिक में साल वन, 2003 में घोषित।
- भिंडावास (झज्जर): हरियाणा की सबसे बड़ी आर्द्रभूमि, मानव-निर्मित, खापरवास अभयारण्य के पास। अन्य अभयारण्य: बीड़ शिकारगाह (पंचकूला), छिलछिला (कुरुक्षेत्र), नाहड़ (रेवाड़ी)।
- जटायु संरक्षण प्रजनन केंद्र, पिंजौर: भारत का पहला गिद्ध प्रजनन केंद्र, BNHS के सहयोग से। मगरमच्छ प्रजनन केंद्र भोर सैदां (कुरुक्षेत्र) में।
- काला हिरण (राज्य पशु) हिसार और फतेहाबाद के बिश्नोई गाँवों द्वारा संरक्षित है; काला तीतर राज्य पक्षी है।

> **त्वरित दोहराव:** महाद्वीपीय उपोष्णकटिबंधीय जलवायु; दक्षिण-पश्चिम में ग्रीष्म में 45°C से ऊपर, लू, आँधियाँ; जनवरी सबसे ठंडा; मानसून जुलाई-सितंबर, सर्दियों में पश्चिमी विक्षोभ; वर्षा शिवालिक में 1,000 मिमी से अधिक से सिरसा में लगभग 300 मिमी तक; जलोढ़ खादर और बांगर, रेतीला दक्षिण-पश्चिम, कल्लर/रेह, CSSRI करनाल; बहुत कम वन आवरण, कलेसर में साल, मोरनी में चीड़; सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान (गुरुग्राम), कलेसर राष्ट्रीय उद्यान (यमुनानगर, 2003); भिंडावास सबसे बड़ी आर्द्रभूमि; जटायु केंद्र पिंजौर; काला हिरण और बिश्नोई।

हरियाणा की कृषि, डेयरी, उद्योग और खेल

हरित क्रांति: हरियाणा का जन्म 1966 में ठीक उसी समय हुआ जब कल्याण सोना और सोनालिका जैसी अधिक उपज वाली बौनी गेहूँ किस्में (नॉर्मन बोरलॉग की मैक्सिकन किस्मों से विकसित), रासायनिक उर्वरक, नलकूप और नहरी जल आए। पंजाब और पश्चिमी उत्तर प्रदेश के साथ यह हरित क्रांति का प्रमुख राज्य बना, और इसका गेहूँ और चावल उत्पादन कई गुना बढ़ गया। हरियाणा ने 1970 तक अपने सभी गाँवों का विद्युतीकरण कर दिया, ऐसा करने वाला यह भारत का पहला राज्य था, जिससे नलकूप चले, और यह केंद्रीय पूल को गेहूँ और चावल का बड़ा आपूर्तिकर्ता बना। इसकी कीमत बाद में चुकानी पड़ी: गिरता भूजल, कुछ क्षेत्रों में जलभराव और लवणता, रसायनों का भारी प्रयोग और धान की कटाई के बाद पराली जलाना।

फसलें: रबी (शीत) ऋतु में लगभग हर जगह गेहूँ मुख्य फसल है; शुष्क दक्षिण में रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ और भिवानी के आसपास सरसों महत्त्वपूर्ण है, और रेतीले क्षेत्रों में चना और जौ। खरीफ़ (मानसून) ऋतु में नहर-सिंचित उत्तर और पूर्व में धान प्रमुख है, जिसमें करनाल, कुरुक्षेत्र, कैथल और पानीपत के आसपास उत्तम बासमती होता है; उत्तर-पश्चिम में सिरसा, फतेहाबाद और हिसार में कपास; शुष्क दक्षिण-पश्चिम में बाजरा और ग्वार; और यमुनानगर, करनाल तथा यमुना पट्टी में गन्ना उगाया जाता है। सिरसा किन्नू के बागों के लिए भी जाना जाता है।

डेयरी और पशुपालन: पशुपालन लगभग हर कृषक परिवार का अंग है, और प्रति व्यक्ति दूध उपलब्धता में हरियाणा भारत के अग्रणी राज्यों में है। इसका गौरव मुर्रा भैंस है, हरियाणा का 'काला सोना': कसकर मुड़े सींगों वाली गहरी काली नस्ल, जो अधिक दूध के लिए प्रसिद्ध है और रोहतक, जींद, हिसार और झज्जर क्षेत्र की मूल नस्ल है। दूध और भारवहन (खेती के काम), दोनों के लिए उपयोगी हरियाणा नस्ल का गोवंश भी इसी क्षेत्र का है। हरियाणा डेयरी विकास सहकारी प्रसंघ 'वीटा' ब्रांड से दूध बेचता है। पुरानी कहावत 'देसां में देस हरियाणा, जित दूध दही का खाणा' (देशों में सबसे अच्छा देश हरियाणा, जहाँ दूध-दही ही रोज़ का भोजन है) इस परंपरा का सार है।

अनुसंधान संस्थान: करनाल और हिसार राज्य के कृषि अनुसंधान के बड़े केंद्र हैं। करनाल में राष्ट्रीय डेयरी अनुसंधान संस्थान (NDRI) है, जिसकी स्थापना 1923 में बेंगलुरु में हुई और जो 1955 में करनाल आया, और जिसके वैज्ञानिकों ने 2009 से क्लोन भैंस के बच्चे तैयार किए; साथ ही केंद्रीय मृदा लवणता अनुसंधान संस्थान (CSSRI), भारतीय गेहूँ एवं जौ अनुसंधान संस्थान (IIWBR) और राष्ट्रीय पशु आनुवंशिक संसाधन ब्यूरो (NBAGR) भी करनाल में हैं। हिसार में चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय (1970), केंद्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान (CIRB), लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय (LUVAS), केंद्रीय भेड़ प्रजनन फ़ार्म और विशाल राजकीय पशुधन फ़ार्म हैं।

औद्योगिक नगर: उद्योग राष्ट्रीय राजधानी क्षेत्र में और ग्रांड ट्रंक रोड के किनारे केंद्रित हैं। 1983 में मारुति उद्योग द्वारा वहाँ मारुति 800 का निर्माण शुरू करने के बाद गुरुग्राम भारत का कार केंद्र बना; बाद में यह IT, आउटसोर्सिंग और कॉर्पोरेट कार्यालयों का केंद्र बना, पास में मानेसर का औद्योगिक मॉडल टाउनशिप (IMT) है, और गुरुग्राम तथा धारूहेड़ा के आसपास दोपहिया वाहन बनते हैं। विभाजन के बाद शरणार्थियों को बसाने के लिए नियोजित फरीदाबाद एक बड़ा औद्योगिक नगर बना, जो ट्रैक्टरों, इंजीनियरिंग सामान और ऑटो पार्ट्स के लिए जाना जाता है। 'बुनकरों का शहर' पानीपत हथकरघा वस्तुओं, कंबलों, दरियों और गृह-सज्जा के सामान के लिए प्रसिद्ध है, और यहाँ इंडियन ऑयल की पानीपत रिफ़ाइनरी (1998) तथा एक ताप विद्युत संयंत्र है।

अन्य औद्योगिक केंद्र: सोनीपत में इंजीनियरिंग इकाइयाँ और कुंडली औद्योगिक क्षेत्र हैं; बहादुरगढ़ जूता-निर्माण का केंद्र है; यमुनानगर और जगाधरी खेतों में उगाए गए पॉपलर से बने प्लाईवुड, धातु के बर्तनों और सरस्वती शुगर मिल्स के लिए जाने जाते हैं; अंबाला छावनी वैज्ञानिक उपकरण उद्योग का केंद्र है; हिसार

स्टेनलेस स्टील के लिए और रेवाड़ी पीतल के बर्तनों के लिए प्रसिद्ध है। करनाल चावल मिलिंग और बासमती निर्यात का, तथा सिरसा कपास ओटाई का केंद्र है।

खेलों में हरियाणा: भारत की जनसंख्या का केवल लगभग 2 प्रतिशत होते हुए भी हरियाणा देश के खेल पदकों का कहीं बड़ा हिस्सा जीतता है, विशेषकर कुश्ती, मुक्केबाज़ी, एथलेटिक्स और कबड्डी में। गाँवों के अखाड़ों, दूध-घी से भरपूर आहार और सेना में सेवा की परंपरा ने यह संस्कृति बनाई। भिवानी बॉक्सिंग क्लब का घर भिवानी भारतीय मुक्केबाज़ी का 'मिनी क्यूबा' कहलाता है; भिवानी के विजेंदर सिंह ने भारत का पहला ओलंपिक मुक्केबाज़ी पदक जीता (कांस्य, बीजिंग 2008)। 'हरियाणा हरिकेन' कपिल देव ने भारत को 1983 का क्रिकेट विश्व कप जिताया। हिसार में जन्मी साइना नेहवाल ने लंदन 2012 में बैडमिंटन में कांस्य पदक जीता; साक्षी मलिक ओलंपिक पदक जीतने वाली भारत की पहली महिला पहलवान बनीं (कांस्य, रियो 2016); और पानीपत के नीरज चोपड़ा ने 2021 में आयोजित टोक्यो खेलों में भाला फेंक में एथलेटिक्स का भारत का पहला ओलंपिक स्वर्ण जीता।

उदाहरण

- हरित क्रांति (1966 से): अधिक उपज वाला गेहूँ (कल्याण सोना, सोनालिका), उर्वरक, नलकूप; हरियाणा ने 1970 तक सभी गाँवों का विद्युतीकरण किया, ऐसा करने वाला पहला राज्य।
- रबी: गेहूँ, सरसों (रेवाड़ी, महेंद्रगढ़, भिवानी), चना। खरीफ़: धान और बासमती (करनाल, कैथल, कुरुक्षेत्र), कपास (सिरसा, फतेहाबाद, हिसार), बाजरा (दक्षिण-पश्चिम), गन्ना (यमुनानगर)।
- मुर्रा भैंस: हरियाणा का 'काला सोना', कसकर मुड़े सींग, अधिक दूध (रोहतक, जींद, हिसार)। हरियाणा नस्ल का गोवंश: दोहरे उपयोग (दूध और भारवहन) वाला। सहकारी दूध ब्रांड: वीटा।
- करनाल: NDRI (1923 में बेंगलुरु में स्थापित, 1955 से करनाल में), CSSRI, IIWBR, NBAGR। हिसार: CCS HAU (1970), CIRB, LUVAS, केंद्रीय भेड़ प्रजनन फ़ार्म।
- गुरुग्राम: 1983 से मारुति 800 का निर्माण, IMT मानेसर, IT केंद्र। फरीदाबाद: विभाजन के बाद शरणार्थियों के लिए बसाया गया; ट्रैक्टर और इंजीनियरिंग सामान का बड़ा औद्योगिक नगर।
- पानीपत: 'बुनकरों का शहर' (हथकरघा, कंबल, दरियाँ); इंडियन ऑयल रिफ़ाइनरी (1998); ताप विद्युत संयंत्र।
- यमुनानगर-जगाधरी: प्लाईवुड, धातु के बर्तन, सरस्वती शुगर मिल्स। अंबाला छावनी: वैज्ञानिक उपकरण। बहादुरगढ़: जूते। हिसार: स्टेनलेस स्टील।
- खेल: भिवानी 'मिनी क्यूबा' (विजेंदर सिंह, कांस्य 2008); कपिल देव 'हरियाणा हरिकेन' (1983 विश्व कप); साक्षी मलिक कांस्य 2016; नीरज चोपड़ा को टोक्यो खेलों (2021) में भाला फेंक में स्वर्ण।

> **त्वरित दोहराव:** हरित क्रांति 1966 से (कल्याण सोना, सोनालिका); 1970 तक सभी गाँवों का विद्युतीकरण, पहला राज्य; गेहूँ और सरसों (रबी), धान/बासमती, कपास, बाजरा, गन्ना (खरीफ़); मुर्रा भैंस, हरियाणा गोवंश, वीटा; करनाल: NDRI (1955), CSSRI, IIWBR, NBAGR; हिसार: CCS HAU (1970), CIRB, LUVAS; गुरुग्राम मारुति 1983; फरीदाबाद इंजीनियरिंग; पानीपत बुनकर और रिफ़ाइनरी 1998; यमुनानगर प्लाईवुड; अंबाला उपकरण; भिवानी मिनी क्यूबा; नीरज चोपड़ा स्वर्ण।

हरियाणा की भाषा, लोक संस्कृति और त्योहार

भाषा और बोलियाँ: हिंदी हरियाणा की राजभाषा है, और अधिकांश लोगों की रोज़मर्रा की बोली हरियाणवी है, जो पश्चिमी हिंदी का एक रूप है और जिसे जॉर्ज ग्रियर्सन के भारतीय भाषा सर्वेक्षण (लिंग्विस्टिक सर्वे ऑफ़ इंडिया) ने खड़ी बोली के निकट रखा। इसके कई क्षेत्रीय रूप हैं। बांगरू, जिसे देसवाली या जाटू भी कहते हैं, रोहतक, झज्जर, जींद और सोनीपत के आसपास मध्य बांगर क्षेत्र में बोली जाती है और गीतों तथा सांग की 'मानक' हरियाणवी है। राजस्थानी के निकट बागड़ी सिरसा, हिसार और भिवानी के पश्चिमी रेतीले क्षेत्र में बोली जाती है; अहीरवाटी रेवाड़ी, महेंद्रगढ़ और गुरुग्राम के कुछ भागों की दक्षिणी अहीरवाल पट्टी में; मेवाती नूंह (मेवात) और आसपास के क्षेत्रों में; और ब्रजभाषा उत्तर प्रदेश की सीमा से लगे पलवल और फरीदाबाद क्षेत्र में। उत्तर-पूर्व में यमुना के किनारे बोली खड़ी बोली में घुल-मिल जाती है, और पंजाब के निकट पंजाबी व्यापक रूप से बोली जाती है।

सांग और रागिनी: सांग (स्वांग) हरियाणा का लोकनाट्य है: खुले में, प्रायः रात को साधारण मंच पर होने वाला प्रदर्शन, जिसमें पुरुषों की मंडली पद्य, गीत और संवाद के माध्यम से पौराणिक, ऐतिहासिक और लोककथाओं का अभिनय करती है, और स्त्री पात्रों की भूमिका भी पुरुष ही निभाते हैं। इसके सबसे बड़े आचार्य सोनीपत जिले के जांटी कलां के पंडित लखमीचंद (1903-1945) थे, जिन्हें हरियाणवी का 'सूर्य कवि' कहा जाता है; उनके 'राजा हरिश्चंद्र', 'मीराबाई' और 'शाही लकड़हारा' जैसे सांग आज भी खेले जाते हैं। अन्य प्रसिद्ध सांगियों में पंडित मांगेराम और बाजे भगत शामिल हैं। सांग से विकसित गायन-पद्य रूप रागिनी आज सबसे लोकप्रिय हरियाणवी लोकगीत शैली है।

लोकनृत्य: हर नृत्य किसी ऋतु या अवसर से जुड़ा है। फाग नृत्य फाल्गुन मास में, जब रबी की फसल पक रही होती है, ढोल और रंगों के साथ पुरुष और स्त्रियाँ करते हैं। लूर नृत्य फाल्गुन में बांगर क्षेत्र की लड़कियाँ प्रश्न-उत्तर शैली के गीतों के साथ करती हैं। खोड़िया बांगर क्षेत्र की स्त्रियों का नृत्य है, जो विशेष रूप से विवाह में बारात के घर से विदा होने वाली रात को किया जाता है। धमाल दक्षिणी हरियाणा के पुरुषों का जोशीला नृत्य है, जो फाल्गुन में डफ की थाप पर किया जाता है। घूमर राजस्थान से लगे क्षेत्रों में लड़कियाँ होली और तीज जैसी उत्सव की रातों में गोल-गोल घूमते हुए करती हैं। गुग्गा नृत्य गुग्गा नवमी के आसपास गुग्गा पीर के भक्त करते हैं, और छठी नृत्य पुत्र-जन्म के छठे दिन की रात को स्त्रियाँ करती हैं।

त्योहार और मेले: सावन के मानसूनी महीने में तीज (हरियाली तीज) स्त्रियों का बड़ा त्योहार है, जिसमें पेड़ों पर झूले, गीत और घेवर जैसी मिठाइयाँ होती हैं। भाद्रपद में गुग्गा नवमी सर्प देवता गुग्गा पीर (जाहरवीर) को समर्पित है। गीता जयंती कुरुक्षेत्र में मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी (नवंबर-दिसंबर) को मनाई जाती है, अब अंतरराष्ट्रीय गीता महोत्सव के रूप में। 1987 में शुरू हुआ सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला हर फ़रवरी में फरीदाबाद के सूरजकुंड में लगता है, जिसमें हर वर्ष भारत का कोई राज्य 'थीम राज्य' होता है और अनेक देशों के शिल्पकार आते हैं। अन्य मेलों में कुरुक्षेत्र का सूर्य ग्रहण मेला, कार्तिक पूर्णिमा पर

बिलासपुर (यमुनानगर) के निकट कपाल मोचन मेला, माता मनसा देवी (पंचकूला) और शीतला माता (गुरुग्राम) के नवरात्र मेले, और पिंजौर का आम मेला शामिल हैं।

शिल्प और वेशभूषा: सूती ओढ़नियों और शॉलों पर चटकीले रेशमी धागे से की जाने वाली फुलकारी और बाग कढ़ाई पंजाब के साथ साझी परंपरा है। पानीपत और गाँवों में दरियाँ और पंजा दरियाँ बुनी जाती हैं, और झज्जर अपनी मिट्टी की सुराहियों के लिए जाना जाता है। अन्य पारंपरिक शिल्पों में मूढ़े (सरकंडे के स्टूल), हाथ से बनी जूतियाँ और रेवाड़ी तथा जगाधरी के पीतल के बर्तन शामिल हैं। स्त्रियों की पारंपरिक वेशभूषा दामण (लंबा, घेरदार घाघरा), कुर्ती और चूंदड़ (सजी हुई ओढ़नी) है, और पुरुषों की धोती, कुर्ता और पगड़ी।

संगीत और साहित्य: लोक संगीत में ढोलक, नगाड़ा, डफ, बीन, अलगोजा, सारंगी, इकतारा, चिमटा और खड़ताल का प्रयोग होता है। हरियाणा ने भारत को मेवाती घराने के गायक पंडित जसराज (1930-2020) भी दिए, जिनका जन्म वर्तमान फतेहाबाद जिले के पीली मंदोरी में हुआ। साहित्य में बाबू बालमुकुंद गुप्त हिंदी पत्रकारिता के अग्रदूत थे, और परंपरा मानती है कि कवि सूरदास का जन्म बल्लभगढ़ (फरीदाबाद) के निकट सीही में हुआ, यद्यपि यह विवादित है। झज्जर के छुड़ानी के संत-कवि गरीबदास ने कबीर की परंपरा में भक्ति-काव्य रचा। रोहतक का पंडित लखमीचंद राज्य प्रदर्शन एवं दृश्य कला विश्वविद्यालय इन परंपराओं को जीवित रखता है।

उदाहरण

- बोलियाँ: बांगरू या देसवाली (मध्य: रोहतक, झज्जर, जींद), बागड़ी (पश्चिम: सिरसा, हिसार, भिवानी), अहीरवाटी (दक्षिण: रेवाड़ी, महेंद्रगढ़), मेवाती (नूंह), ब्रजभाषा (पलवल, फरीदाबाद)।
- सांग: पद्य और गीत में खुले मंच का लोकनाट्य, जिसमें स्त्री पात्र भी पुरुष निभाते हैं; जांटी कलां (सोनीपत) के पंडित लखमीचंद (1903-1945) 'सूर्य कवि' हैं।
- रागिनी: सबसे लोकप्रिय हरियाणवी लोकगीत शैली, जो सांग से विकसित हुई।
- फाग: फाल्गुन, पुरुष और स्त्रियाँ। लूर: बांगर की लड़कियाँ, फाल्गुन, प्रश्न-उत्तर गीत। खोड़िया: स्त्रियाँ, बारात विदा होने की रात। धमाल: दक्षिण के पुरुष, डफ के साथ। घूमर: लड़कियाँ, राजस्थान सीमा क्षेत्र।
- तीज (सावन): झूले और घेवर। गुग्गा नवमी (भाद्रपद): गुग्गा पीर। गीता जयंती कुरुक्षेत्र में मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी को।
- सूरजकुंड अंतरराष्ट्रीय शिल्प मेला: फरीदाबाद, 1987 से हर फ़रवरी, हर वर्ष एक थीम राज्य के साथ।
- मेले: सूर्य ग्रहण मेला (कुरुक्षेत्र), कपाल मोचन (यमुनानगर, कार्तिक पूर्णिमा), मनसा देवी (पंचकूला), शीतला माता (गुरुग्राम), आम मेला (पिंजौर)।
- स्त्रियों की वेशभूषा: दामण, कुर्ती, चूंदड़; पुरुषों की: धोती, कुर्ता, पगड़ी। शिल्प: फुलकारी, दरियाँ (पानीपत), झज्जर की सुराहियाँ।
- पंडित जसराज (मेवाती घराना) का जन्म पीली मंदोरी (अब फतेहाबाद जिला) में हुआ; परंपरा सूरदास का जन्म बल्लभगढ़ के निकट सीही में मानती है।

> **त्वरित दोहराव:** हिंदी राजभाषा; हरियाणवी बोलियाँ: बांगरू/देसवाली (मध्य), बागड़ी (पश्चिम), अहीरवाटी (दक्षिण), मेवाती (नूंह), ब्रज (पलवल); सांग लोकनाट्य, पंडित लखमीचंद 'सूर्य कवि' (जांटी कलां, सोनीपत), रागिनी; नृत्य फाग, लूर, खोड़िया, धमाल, घूमर, गुग्गा, छठी; तीज, गुग्गा नवमी, गीता जयंती (कुरुक्षेत्र); सूरजकुंड शिल्प मेला 1987 से हर फ़रवरी; फुलकारी, दरियाँ, सुराहियाँ; दामण-कुर्ती-चूंदड़; पंडित जसराज (मेवाती घराना)।

हरियाणा के स्मारक, पर्यटन स्थल और प्रसिद्ध व्यक्तित्व

कुरुक्षेत्र: कुरुक्षेत्र हरियाणा का सबसे प्रसिद्ध तीर्थ है। विशाल पवित्र सरोवर ब्रह्म सरोवर सूर्य ग्रहण के समय पवित्र स्नान के लिए लाखों श्रद्धालुओं को आकर्षित करता है और गीता महोत्सव का मुख्य स्थल है; सन्निहित सरोवर पास का एक और पूजित सरोवर है। पिहोवा मार्ग पर स्थित ज्योतिसर को वह स्थान माना जाता है जहाँ श्रीकृष्ण ने अर्जुन को गीता का उपदेश दिया, और यहाँ एक पुराना वटवृक्ष इसका प्रतीक है; पास ही कल्पना चावला मेमोरियल तारामंडल है। अन्य स्थलों में भद्रकाली मंदिर (एक शक्तिपीठ), थानेसर का स्थाणेश्वर महादेव मंदिर, नरकातारी में भीष्म कुंड, कुरुक्षेत्र पैनोरमा एवं विज्ञान केंद्र और श्रीकृष्ण संग्रहालय शामिल हैं।

शेख चिल्ली का मकबरा और हर्ष का टीला: थानेसर में शेख चेहली, लोकप्रिय नाम शेख चिल्ली, नामक सूफ़ी संत का मकबरा है, जिन्हें मुगल शहज़ादे दारा शिकोह का आध्यात्मिक मार्गदर्शक कहा जाता है। 17वीं शताब्दी में फ़ारसी शैली में बना यह मकबरा, सफ़ेद संगमरमर के गुंबद, एक मदरसे और बागों के साथ, भारतीय पुरातत्व सर्वेक्षण द्वारा संरक्षित है। इसके पास ही हर्ष का टीला नामक विशाल टीला है, जो हर्षवर्धन की राजधानी स्थाण्वीश्वर से जुड़ा है।

पिंजौर, सूरजकुंड और अन्य स्मारक: पंचकूला के निकट पिंजौर उद्यान (यादवेंद्र उद्यान) 17वीं शताब्दी में औरंगज़ेब के दूध-भाई नवाब फ़िदाई खाँ ने मुगल शैली में सात उतरती वेदिकाओं (सीढ़ीनुमा स्तरों) पर बनवाया, जिसमें जल-नालियाँ, फव्वारे और शीश महल तथा रंग महल जैसे मंडप हैं; बाद में पटियाला के महाराजा यादवेंद्र सिंह ने इसका जीर्णोद्धार किया और इसका नाम उनके नाम पर रखा गया। फरीदाबाद के निकट सूरजकुंड 10वीं शताब्दी का रंगमंच-आकार का जलाशय है जिसका श्रेय तोमर राजा सूरजपाल को दिया जाता है, और पास का अनंगपुर बाँध भी तोमरों से जुड़ा है। नारनौल में इब्राहिम खाँ सूर का मकबरा, जल महल और बीरबल का छत्ता हैं; हिसार में फ़िरोज़ शाह का महल, जिसमें गूजरी महल और लाट की मस्जिद हैं, तथा जहाज़ कोठी है; और हांसी में पुराना असीगढ़ किला है।

कोस मीनारें और पानीपत:
कोस मीनारें ईंटों के ठोस, गोल स्तंभ हैं जिन्हें मुगलों ने अकबर के समय से आगरा से दिल्ली होते हुए लाहौर तक जाने वाले शाही मार्ग पर लगभग एक कोस (लगभग 3 किमी) की दूरी पर बनवाया; यही मार्ग ग्रांड ट्रंक रोड का पूर्वज है। इनमें से कई हरियाणा के फरीदाबाद, पलवल, सोनीपत, पानीपत, करनाल और कुरुक्षेत्र जिलों में संरक्षित स्मारकों के रूप में बची हैं। पानीपत अपने तीन युद्धों की स्मृति संजोए है: पानीपत संग्रहालय उनकी जानकारी देता है, काला अंब 1761 की युद्धभूमि को चिह्नित करता है, और नगर में इब्राहिम लोदी का मकबरा, बाबर की काबुली बाग मस्जिद, हेमू का स्मारक और सूफ़ी संत बू अली शाह कलंदर की दरगाह भी है।

पर्यटन: हरियाणा पर्यटन ने मुख्य सड़कों पर पर्यटन परिसरों की श्रृंखला बनाकर राजमार्ग पर्यटन की शुरुआत की, जिनमें से कई के नाम पक्षियों पर हैं, जैसे समालखा में ब्लू जे, पानीपत में स्काईलार्क और पिपली में पैराकीट। अन्य आकर्षणों में मोरनी पहाड़ियाँ और टिक्कर ताल, सुल्तानपुर और कलेसर राष्ट्रीय उद्यान, बड़खल और दमदमा झीलें, अग्रोहा धाम, आदि बद्री, पंचकूला का मनसा देवी मंदिर और राखीगढ़ी के उत्खनित टीले शामिल हैं।

सार्वजनिक जीवन के व्यक्तित्व: सर छोटूराम (दीनबंधु), पंडित नेकीराम शर्मा (हरियाणा केसरी) और राव तुलाराम इस क्षेत्र के स्वतंत्रता-काल के प्रतीक हैं, और लाला लाजपत राय ने अपना सार्वजनिक जीवन हिसार से शुरू किया। वर्तमान सिरसा जिले में जन्मे और 'ताऊ' कहलाने वाले चौधरी देवीलाल भारत के उप-प्रधानमंत्री (1989-1991) रहे। अंबाला छावनी में जन्मी सुषमा स्वराज 25 वर्ष की आयु में हरियाणा की कैबिनेट मंत्री बनीं, और बाद में दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री तथा विदेश मंत्री बनीं।

विज्ञान, साहस और कला: करनाल में जन्मी कल्पना चावला 1997 में अंतरिक्ष यान कोलंबिया (STS-87) से अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला बनीं, और 1 फ़रवरी 2003 को पृथ्वी के वायुमंडल में पुनः प्रवेश के समय कोलंबिया के टूट जाने से उनकी मृत्यु हो गई। रेवाड़ी जिले की संतोष यादव माउंट एवरेस्ट पर दो बार (1992 और 1993) चढ़ने वाली पहली महिला थीं। कला में पंडित जसराज, पंडित लखमीचंद और बाबू बालमुकुंद गुप्त बड़े नाम हैं, और खेल में कपिल देव, विजेंदर सिंह, साइना नेहवाल, साक्षी मलिक और नीरज चोपड़ा।

उदाहरण

- ब्रह्म सरोवर (कुरुक्षेत्र): पवित्र सरोवर, सूर्य ग्रहण पर पवित्र स्नान, गीता महोत्सव का मुख्य स्थल। ज्योतिसर: पुराने वटवृक्ष वाला गीता-उपदेश स्थल।
- शेख चिल्ली का मकबरा (थानेसर): दारा शिकोह के आध्यात्मिक मार्गदर्शक माने जाने वाले सूफ़ी संत का 17वीं शताब्दी का मुगल मकबरा; ASI द्वारा संरक्षित; हर्ष के टीले के पास।
- पिंजौर (यादवेंद्र) उद्यान: 17वीं शताब्दी में नवाब फ़िदाई खाँ ने सात वेदिकाओं पर बनवाया; पटियाला के महाराजा यादवेंद्र सिंह के नाम पर नामकरण।
- सूरजकुंड (फरीदाबाद): तोमर राजा सूरजपाल का 10वीं शताब्दी का रंगमंच-आकार का जलाशय; शिल्प मेले का स्थल। पास का अनंगपुर बाँध भी तोमरकालीन है।
- कोस मीनारें: आगरा-दिल्ली-लाहौर मार्ग पर लगभग एक कोस (लगभग 3 किमी) की दूरी पर बने मुगल मील-स्तंभ; कई फरीदाबाद, पलवल, सोनीपत, पानीपत, करनाल और कुरुक्षेत्र में बचे हैं।
- पानीपत: पानीपत संग्रहालय, काला अंब (1761 की युद्धभूमि), इब्राहिम लोदी का मकबरा, काबुली बाग मस्जिद, हेमू का स्मारक, बू अली शाह कलंदर की दरगाह।
- नारनौल: इब्राहिम खाँ सूर का मकबरा, जल महल, बीरबल का छत्ता। हिसार: गूजरी महल, लाट की मस्जिद, जहाज़ कोठी। हांसी: असीगढ़ किला।
- कल्पना चावला (करनाल): अंतरिक्ष में जाने वाली भारतीय मूल की पहली महिला (कोलंबिया, 1997); 1 फ़रवरी 2003 को कोलंबिया दुर्घटना में मृत्यु।
- संतोष यादव (रेवाड़ी): एवरेस्ट पर दो बार चढ़ने वाली पहली महिला (1992, 1993)। देवीलाल ('ताऊ'): उप-प्रधानमंत्री 1989-1991। सुषमा स्वराज (अंबाला छावनी): 25 वर्ष की आयु में हरियाणा में मंत्री, दिल्ली की पहली महिला मुख्यमंत्री।

त्वरित दोहराव: कुरुक्षेत्र: ब्रह्म सरोवर, सन्निहित सरोवर, ज्योतिसर (गीता-स्थल, वटवृक्ष), भद्रकाली शक्तिपीठ; थानेसर: शेख चिल्ली का मकबरा (17वीं शताब्दी, दारा शिकोह के मार्गदर्शक), हर्ष का टीला; पिंजौर उद्यान (फ़िदाई खाँ, सात वेदिकाएँ, यादवेंद्र सिंह); सूरजकुंड (तोमर सूरजपाल); आगरा-लाहौर मार्ग पर कोस मीनारें; पानीपत: काला अंब, लोदी का मकबरा, काबुली बाग, बू अली शाह कलंदर; कल्पना चावला (करनाल, 1997, 2003); संतोष यादव (एवरेस्ट दो बार); देवीलाल; सुषमा स्वराज।

मुफ़्त अभ्यास प्रश्न: parikshasaathi.com/hi/q/haryana-state-gk/

दोहराव पत्रक

हर पाठ का त्वरित दोहराव एक जगह - परीक्षा से पहले की आख़िरी पढ़ाई के लिए।

हरियाणा सामान्य ज्ञान	हरियाणा गठन 1 नवंबर 1966 (पंजाब पुनर्गठन अधिनियम, शाह आयोग); प्रथम मुख्यमंत्री भगवत दयाल शर्मा, राज्यपाल धर्म वीर; विधान सभा 90, लोकसभा 10, राज्यसभा 5; राजधानी और उच्च न्यायालय चंडीगढ़ में साझा; राखीगढ़ी (हांसी, पहले हिसार), बनावली और भिरड़ाना (फतेहाबाद); थानेसर में हर्ष 606 ई.; तराइन 1191/1192; पानीपत 1526, 1556, 1761; हिसार 1354; राव तुलाराम, नसीबपुर 1857; यमुना एकमात्र बारहमासी नदी, हथनीकुंड; घग्घर पर ओटू, साहिबी पर मसानी; सुल्तानपुर, कलेसर राष्ट्रीय उद्यान; काला हिरण, काला तीतर, पीपल, कमल; मुर्रा; सूरजकुंड मेला फ़रवरी में।
प्राचीन हरियाणा: हड़प्पाकालीन स्थल, कुरुक्षेत्र और थानेसर	राखीगढ़ी भारत का सबसे बड़ा हड़प्पाकालीन स्थल (नारनौंद; लंबे समय तक हिसार जिला, अब हांसी जिला; 2020 में प्रतिष्ठित स्थल); बनावली (फतेहाबाद, आर.एस. बिष्ट) हल का प्रतिरूप; कुणाल चाँदी के मुकुट; भिरड़ाना 8वीं-7वीं सहस्राब्दी ई.पू.; मिताथल (भिवानी); ब्रह्मावर्त सरस्वती-दृषद्वती के बीच (मनुस्मृति); कुरु राजधानी इंद्रप्रस्थ; ज्योतिसर गीता-स्थल; टोपरा स्तंभ पर सातों लेख; यौधेय, कार्तिकेय वाले सिक्के, खोखराकोट; अग्रोहा-अग्रसेन; हर्ष का राज्याभिषेक थानेसर में 606 ई., बाद में कन्नौज; बाणभट्ट।
मध्यकालीन हरियाणा: तराइन, पानीपत के तीन युद्ध और उसके बाद	तोमर: ढिल्लिका, लालकोट, सूरजकुंड; तराइन (तरावड़ी) 1191 में पृथ्वीराज जीते, 1192 में गौरी जीता; दिल्ली सल्तनत 1206; रज़िया कैथल के निकट मारी गई 1240; हिसार 1354; तैमूर 1398; पानीपत 21 अप्रैल 1526 बाबर ने इब्राहिम लोदी को हराया; 5 नवंबर 1556 बैरम खाँ ने हेमू को हराया; 14 जनवरी 1761 अब्दाली ने सदाशिवराव भाऊ को हराया, काला अंब; नारनौल में इब्राहिम खाँ सूर का मकबरा; बंदा लोहगढ़ में; करनाल 1739 नादिरशाह; जॉर्ज थॉमस हांसी में; सुर्जी-अंजनगाँव 1803।
आधुनिक हरियाणा: ब्रिटिश शासन, 1857 और स्वतंत्रता संग्राम	1803 सुर्जी-अंजनगाँव; दिल्ली क्षेत्र, फिर उत्तर-पश्चिमी प्रांत; 1857: नाहर सिंह (बल्लभगढ़) और अब्दुर्रहमान खाँ (झज्जर) को मृत्युदंड; रेवाड़ी के राव तुलाराम, नसीबपुर 16 नवंबर 1857, कर्नल जेरार्ड मारा गया, तुलाराम का काबुल में निधन 1863; 1858 में क्षेत्र पंजाब में मिला; लाजपत राय हिसार में 1886; छोटूराम का जन्म गढ़ी सांपला 1881, जाट गज़ट 1916, यूनियनिस्ट पार्टी 1923, दीनबंधु; नेकीराम शर्मा हरियाणा केसरी; गांधीजी भिवानी में 1920; जींद पेप्सू में, पंजाब 1956।
हरियाणा का गठन (1966), प्रशासन और राजव्यवस्था	पंजाबी सूबा आंदोलन; सच्चर (1949) और क्षेत्रीय (1956) फ़ॉर्मूले; हुकम सिंह समिति; शाह आयोग 1966 (1961 की जनगणना का आधार); पंजाब पुनर्गठन अधिनियम 1966; हरियाणा 17वाँ राज्य, 1 नवंबर 1966; चंडीगढ़ केंद्रशासित प्रदेश और साझा राजधानी; प्रथम मुख्यमंत्री भगवत दयाल शर्मा, राज्यपाल धर्म वीर, अध्यक्ष शन्नो देवी; विधान सभा 90 (17 SC), लोकसभा 10 (अंबाला, सिरसा SC), राज्यसभा 5; साझा उच्च न्यायालय (अनुच्छेद 231); आया राम गया राम 1967; हिंदी राजभाषा (1969 अधिनियम); बेटी बचाओ बेटी पढ़ाओ पानीपत 2015।
हरियाणा का भूगोल: स्थिति, क्षेत्रफल और भौतिक प्रदेश	स्थलरुद्ध; 44,212 वर्ग किमी (भारत का लगभग 1.34 प्रतिशत); सीमाएँ पंजाब, चंडीगढ़, हिमाचल प्रदेश, उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड (यमुना के पार), राजस्थान से; दिल्ली को तीन ओर से घेरता है; जनगणना 2011: 2.54 करोड़, घनत्व 573, साक्षरता 75.55 प्रतिशत; चार प्रदेश: शिवालिक (उत्तर-पूर्व, चो, मोरनी पहाड़ियाँ, करोह चोटी लगभग 1,467 मीटर), घग्घर-यमुना मैदान (खादर, बांगर), रेतीला मैदान (दक्षिण-पश्चिम, बागड़), अरावली (दक्षिण, ढोसी पहाड़ी)।
हरियाणा की नदियाँ, नहरें और झीलें	यमुना एकमात्र बारहमासी नदी, यमुनानगर में प्रवेश, हथनीकुंड बैराज (ताजेवाला के स्थान पर); पश्चिमी यमुना नहर (फ़िरोज़ शाह तुगलक, अली मर्दान खाँ, अंग्रेज़; दिल्ली, हांसी, सिरसा शाखाएँ); घग्घर (घग्घर-हकरा तंत्र, ओटू बैराज, कौशल्या, टांगरी, मारकंडा); साहिबी (मसानी बैराज, नजफ़गढ़ नाला); भाखड़ा मुख्य नहर, BBMB; SYL 214 किमी (122 पंजाब, 92 हरियाणा), कपूरी 1982, लंबा विवाद; झीलें बड़खल, सूरजकुंड, दमदमा, तिलयार, कर्ण, ब्लू बर्ड; ब्रह्म सरोवर।
हरियाणा की जलवायु, मृदा, वन और वन्यजीव	महाद्वीपीय उपोष्णकटिबंधीय जलवायु; दक्षिण-पश्चिम में ग्रीष्म में 45°C से ऊपर, लू, आँधियाँ; जनवरी सबसे ठंडा; मानसून जुलाई-सितंबर, सर्दियों में पश्चिमी विक्षोभ; वर्षा शिवालिक में 1,000 मिमी से अधिक से सिरसा में लगभग 300 मिमी तक; जलोढ़ खादर और बांगर, रेतीला दक्षिण-पश्चिम, कल्लर/रेह, CSSRI करनाल; बहुत कम वन आवरण, कलेसर में साल, मोरनी में चीड़; सुल्तानपुर राष्ट्रीय उद्यान (गुरुग्राम), कलेसर राष्ट्रीय उद्यान (यमुनानगर, 2003); भिंडावास सबसे बड़ी आर्द्रभूमि; जटायु केंद्र पिंजौर; काला हिरण और बिश्नोई।
हरियाणा की कृषि, डेयरी, उद्योग और खेल	हरित क्रांति 1966 से (कल्याण सोना, सोनालिका); 1970 तक सभी गाँवों का विद्युतीकरण, पहला राज्य; गेहूँ और सरसों (रबी), धान/बासमती, कपास, बाजरा, गन्ना (खरीफ़); मुर्रा भैंस, हरियाणा गोवंश, वीटा; करनाल: NDRI (1955), CSSRI, IIWBR, NBAGR; हिसार: CCS HAU (1970), CIRB, LUVAS; गुरुग्राम मारुति 1983; फरीदाबाद इंजीनियरिंग; पानीपत बुनकर और रिफ़ाइनरी 1998; यमुनानगर प्लाईवुड; अंबाला उपकरण; भिवानी मिनी क्यूबा; नीरज चोपड़ा स्वर्ण।
हरियाणा की भाषा, लोक संस्कृति और त्योहार	हिंदी राजभाषा; हरियाणवी बोलियाँ: बांगरू/देसवाली (मध्य), बागड़ी (पश्चिम), अहीरवाटी (दक्षिण), मेवाती (नूंह), ब्रज (पलवल); सांग लोकनाट्य, पंडित लखमीचंद 'सूर्य कवि' (जांटी कलां, सोनीपत), रागिनी; नृत्य फाग, लूर, खोड़िया, धमाल, घूमर, गुग्गा, छठी; तीज, गुग्गा नवमी, गीता जयंती (कुरुक्षेत्र); सूरजकुंड शिल्प मेला 1987 से हर फ़रवरी; फुलकारी, दरियाँ, सुराहियाँ; दामण-कुर्ती-चूंदड़; पंडित जसराज (मेवाती घराना)।
हरियाणा के स्मारक, पर्यटन स्थल और प्रसिद्ध व्यक्तित्व	कुरुक्षेत्र: ब्रह्म सरोवर, सन्निहित सरोवर, ज्योतिसर (गीता-स्थल, वटवृक्ष), भद्रकाली शक्तिपीठ; थानेसर: शेख चिल्ली का मकबरा (17वीं शताब्दी, दारा शिकोह के मार्गदर्शक), हर्ष का टीला; पिंजौर उद्यान (फ़िदाई खाँ, सात वेदिकाएँ, यादवेंद्र सिंह); सूरजकुंड (तोमर सूरजपाल); आगरा-लाहौर मार्ग पर कोस मीनारें; पानीपत: काला अंब, लोदी का मकबरा, काबुली बाग, बू अली शाह कलंदर; कल्पना चावला (करनाल, 1997, 2003); संतोष यादव (एवरेस्ट दो बार); देवीलाल; सुषमा स्वराज।

Pariksha Saathi एक स्वतंत्र परियोजना है और किसी भर्ती संस्था या सरकारी विभाग से संबद्ध नहीं है। हर विषय के नोट्स: parikshasaathi.com/downloads/